Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 02 28 फरवरी, 2021 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

दीनबंधु की कथा-किसान की व्यथा

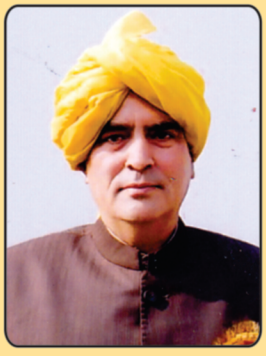

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

जिसके पांव ना फटी बिवाई–वो क्या जाने पीर–पराई। लेकिन सर छोटूराम एक मात्र नेता जो 'दीन' थे बालमन साहूकार के दुरव्यवहार से आहत हुआ कर्मठ योद्धा ने तभी से संकल्प लिया और दीन से दीन बंधु बना। किसान मानवता का पुजारी और कीट–पक्षी तक का रक्षक है। आज थोड़े प्यार दुलार से उसकी दुखती रग को पहचाने और मरहम लगाने से समाधान आसानी से निकल जाएगा।

सरकारों की लगातार बेरूखी से किसान और किसानी दोनों आहत है खेती दिन ब दिन घाटे का सौदा बनती गई। दीनबंधु अपने जीवनकाल में विपरित वातावरण, परिस्थितियों और उस समय के अखंड और धुर्त अधिकारियों के बावजूद 32 बिल किसान भलाई हेतू पारित करवा दिए। आए दिन पड़ते अकालों की विपक्षता तक को सदा के लिए हल निकाला और भाखड़ा डैम की रूप रेखा तैयार करवा दी और जिसे देखने हेतू वे संसार में नहीं रहे।

दीनबंधु किसी जाति वर्ग के ना थे वे मानवता के पुजारी और स्वंय एक पूर्ण संस्था थे, जो एक वकील शिक्षाविद–राजनेता–किसान और दीनबंधु थे। पाकिस्तान के एक मात्र **"नोबल"** पुरस्कार विजेता अब्दुस कलाम ने पुरस्कार समारोह में ही माना था कि अगर दीनबंधु सर छोटूराम ना होते तो अब्दुस कलाम आज यहां ना होतें। उन्होंने अपने वेतन से किसान और शिक्षा कोष शुरू किए। मजहब नहीं सिखाता अपनो से बैर रखना उन्होंने चरितार्थ कर दिखाया – इसीलिए उन्हें मुस्लिम वर्ग "छोटूखान" के नाम से भी संबोधित करता था।

इतिहास गवाह है किसान का अहित करने वाली कभी कोई सरकार चल नहीं पाई। दीन बंधु कहते थे "गरीब को न सताना वो रो देगा और अनसुनी करने वालों को जड़ मूल से खो देगा।" चंपारन सत्याग्रह एक उत्कृष्ट उदाहरण है। जाबिर अंग्रेजो के पांव के नीचे की जमीन छिन गई। वर्तमान सरकार ने 12 बार आगे कदम रखे लेकिन अगले ही पल 15 कदम पीछे गई। वर्तमान बजट में पेट्रोल–डीजल पर **"कृषि कर"** लगाया है इससे कृषि उपज परिसंस्करण हेतू आधारभूत संरचना पैदा की जाएगी। इससे बहुमूल्य अनाज संरक्षण–उत्पाद की कीमत में बढ़ौतरी तथा रोजगार उपलब्ध होंगे – वर्तमान बजट में कृषि ऋण वितरण में 10 प्रतिशत बढ़ोतरी के प्रावधान है इसके लिए 16.5 लाख करोड़ की धनराशि का आबंटन भी है। किसान की क्रय शक्ति अवश्य बढ़ेगी लेकिन इसका दूसरा पहलू इससे भी व्यापक है। **"कर्ज–मर्ज–गर्ज"** में डूबा किसान और अधिक ऋण के दलदल में फसेगा। इससे किसान को पुनः आश्वस्त भी किया है कि मौजूदा मण्ड़ी सिस्टम पर कोई असर नहीं होगा अतः पारित तीनों बिल 18 माह के लिए स्थापित करने के लिए आसवाश्सन दिया। वितमंत्री श्रीमति निर्मला सीतारमण का कथन है कि इससे **"कम से कम कीमत"** (MSP) में भी कम से कम 1.5 गुना बढ़ौतरी निहित है लेकिन सरकार किसान में विश्वास पैदा करने में पिफल है और लाखों किसान सड़क किनारे पड़ाव डाले हर मौसम व पुलिस की मार झेल रहे हैं। शान्तिपूर्ण सत्याग्रहियों में खालिस्तानी तत्व भी अपना उल्लू सीधा करने पहुंच गए है। अनुमान है कि 26 जनवरी के पर्व में व्यवधान पैदा करने हेतू ऐसे तत्व भी सरगर्म हो गए। जिन कारगुजारियों से आंदोलन को धक्का लगा अगर आज दीनबंधु होते वे भी व्यथित हो जाते कि नेक दिल इन्सान दंगाई कैसे हो गया।

एक वरिष्ठ पूर्व पुलिस अधिकारी रिबैरों ने कहा कि अगर सरकार का हाथ ऐसे कृत्यों में लेश मात्र भी है तो मंथन में भी निर्दोष आंदोलनकारी ही पकड़े जाएगें जो समाज की भलाई में उचित ना होगा। ऐसे में किसान दीनबन्धु जैसे एक व्यक्तिव को ही गुहार लगाएगा जो एकमत से समाधान निकाल पाएगा। हालांकि कुछेक जानी पुरूषों का मत यह भी है कि जो राज्य इन बिलो को अपने यहां लागू नहीं करना चाहते उन्हें छूट दे दी जाए। उदाहरण पंजाब ने कान्ट्रैक्ट फारमिंग पर बिल 2017 में ही पारित किया हुआ है बल्कि उसमें तो सजा का भी प्रावधान है ऐसे ही दिल्ली ने बिल पारित किए हुए हैं लेकिन अपने वोट बैंक की राजनीति करने पर बाध्य हो रहा है। किसान हितैषी कुछेक पार्टियां शुरू से ही इसके विपरीत है लेकिन सता में कोई दूसरी पार्टी है अतः समाधान इतना सरल ना होगा। कम से कम खरीद कीमत को अगर सरकार अनिवार्य कर दें। शायद बहुत ही जत्थेबंधिया मान जाए ताकि आमजन को आंदोलन की वजह से हो रही असुविधा से राहत मिल सके और किसान भी पुनः अपनो के बीच अपने खेत खलियान को लौट सकें। चौधरी छोटू राम सदैव किसान व किसानों के बेरोजगार पुत्रों की बेरोजगारी दूर करने की बात करते थे व कहते थे "म्यसर ना हो जिस खेत से दो जून की रोटी उस खेत के गोछाए गन्दम को जला दो" तथा दूसरे ही पल "भर्ती होजे रै रंगरूट, आड़ै मिलै तनै–टूटे जूते उड़े मिलैंगे बूट।" इसमें कितना दर्द और मरहम स्पष्ट झलकता है। किसान की दशा दिशा बदलने हेतू वे विरोध भी कर रहे हैं ताकि किसान का बेटा फौज में जाएगा तो अपने बच्चों को शिक्षा भी दे सकेगा, और धर की आर्थिक दशा–दिशा भी सुधार सकेगा।

अन्नदाता की व्यथा–कथा को समझना होगा, स्वीकारना होगा,

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

अगर किसान खेती से बेमुख हो गया तो खाद्यान की आपूर्ति की गाड़ी लाईन से उतरी तो पुनः पटरी पर लानी इतनी आसान ना होगी। खेती किसानों के साथ – पशुपालन भी एक अभिन्न अंग होते अलग हो गया है आज ही दूध की कमी को इन्सान मानने लगा है लेकिन समाधान हेतू पग ना के बराबर है।

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, आज जो नारा है वह उन्होंने अपने जीवन काल में अपने ऊपर कर दिखाया। समाज के दबाब के बावजूद दूसरी शादी ना की। उन्होने एक ही बेटी को बेटा मान पालन–पोषण किया। वे समाज में व्यापक कुरीतियों और कृषक समाज के अधिकारियों के गलत आचरण से छुट की हो गए तथा कहा था "मैं किसान कौम को ह्रदय से प्यार करता हूँ – मुझे जानकर गहरा दुख हुआ कि इस कौम के कुछेक अधिकारी शराब के व्यसन में फस कर अवैध रूप से भेंट स्वीकार करते हैं – इससे उनके व्यसन से उनके परिवार और समाज दोनों पर असर पड़ता है – क्योंकि जिनसे रिश्वत ली जाती है जो अपने बच्चों का पेट तक नहीं भर पाते, हम इतने निर्दयी और कठोर ह्रदय कैसे हो सकते हैं और तथ्यों से मूह मोड़ लें। वे सादा जीवन, उच्च विचार, चरित्र में महानता, ईमानदारी और परस्पर मिलकर संघर्ष करने के पक्षधर रहे।

इतिहास गवाह है कि अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने – 'लांग हट' से 'व्हाइट हाउस' पहुंचते ही दास प्रथा का अन्त किया था। अगर अब्राहम लिकंन सिंहासन से एक संत था, तो चौधरी छोटूराम सड़कों का एक राजा था। उनका जीवन सदा निष्काम सेवा में लगा रहा। उन्होंने अपने जीवनभर की साधना को परहित में वार दिया था, अपनी सब इच्छा–अकांक्षाओं को मार, सुख–सुविधाओं को त्याग एक उद्देश्य की आपूर्ति में लगे रहे। उनकी कलम की चोट से शोषकदल धराशाही हो गया, करोड़ों शोषित–दलित तथा बेचारगी का जीवन जीने वाले आर्थिक गुलामी से मुक्त हो गए – परिणाम उनके जीवन काल में ही दिखने लगे। उनका विरोध भी डटकर हुआ। साहूकार परिवारों ने रोष रैलियां निकाली, उनकी अर्थियां तक फूकी गई और नारे लगे – 'ए की होया, छोटू मोया' लेकिन वे कभी विचलित नहीं हुये और अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर ही माने। आमजन कह उठा :–

'हर मुकाम से आगे मुकाम तेरा,
हयाते जौके–सफर के सिवा कुछ नहीं।

उनका मानना था कि हम 'पक्षियों की तरह उड़ना सीख गए हैं, मछली की तरह तैरना सीख गए हैं, लेकिन इंसान बनकर रहना कब सीखेंगे। किसान को दी जाने वाली सब्सिडी के नाम पर भी भ्रष्टाचार का कोढ़ चिपका हुआ है। उसको मिला है नकली बीज, खाद और इवाईयां वह भी दोगुने दाम पर। फसल ऋण के नाम पर आधुनिक साहूकार (बैंक) भी उसे लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ते। किस्त देने के बावजूद ऋण जस का तस खड़ा रहता है। ऐसे हालात में सर छोटूराम के फसल जलाने के फरमान को ब्रह्मास्त्र के रूप में लेते हुए आंध्रप्रदेश के किसानों ने कृषि छुट्टी का ऐलान किया है क्योंकि आमदनी ना होने की वजह से वे खेती नहीं करना चाहते। देश के अन्य हिस्सों में भी हालात अच्छे नहीं हैं।

देश में आए दिन किसान की आत्म हत्याओं की खबर मिलती रहती हैं। आखिर ऐसा कब तक? वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में 5 एकड़ से कम जोत वाले किसानों की संख्या 67 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 80 प्रतिशत हो गई है। आज औसतन किसान परिवार के पास एक से अढ़ाई एकड़ भूमि ही रह गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज 90 प्रतिशत किसान ऋण में दबे हुए हैं जोकि मुख्यतः किसान क्रेडिट कार्ड के सहारे गुजारा कर रहे हैं और फसल पकने से पूर्व ही किसान से छिन जाती है। इसके साथ ही कृषि लागतों में लगातार हो रही वृद्धि, सरकार की कामगार किसान विरोधी नीतियो व कृषि लागत से पैदावार के कम मूल्यों के कारण किसान की माली हालत दयनीय होती जा रही है जबकि राष्ट्रीय कृषि आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि आज के हालात में 10 एकड़ से कम जोतों पर कृषि करना पूर्णतया घाटे का सौदा बन गया है। इसके बावजूद भी किसान की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किए जा रहे हैं। युरोपियन युनियन अधिक पैदावार होने पर किसानों को फसल छुट्टी की सलाह देती है तथा उसकी फसल भरपाई किसान को युनियन करती है। इसीलिए वहां किसान खुशहाल है। सर छोटू राम ने किसान–मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू–उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है। गत वर्ष पारित किया गया भूमि अधिग्रहण करने के लिए कम से कम 80 प्रतिशत व जनहित कार्यों के लिए किसान की भूमि अधिग्रहण करने हेतू न्यूनतम 70 प्रतिशत भू–स्वामियों की स्वीकृति आवश्यक है। अधिग्रहित भूमि का मुजावजा भी बाजार दर से तीन–चार गुणा ज्यादा रखा गया है लेकिन इस कानून को लागू करने में वर्तमान सरकार असमर्थ है। शायर निदा फाजली ने कहा है :– "पहले हर चीज थी अपनी मगर अब लगता है, अपने ही घर में किसी दूसरे घर के हम हैं।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

वक्त के साथ है मिट्टी का सफर सदियों तक,
किसको मालूम कहां के हैं, कहां के हम हैं।।"

सरकार के इशारे मात्र और थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति का फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो माडल अपनाया गया उसकी सफलता और विफलता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपत्ति केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। एक रिपोर्ट के अनुसार एक दशक में 6 लाख करोड़ रूपये गैर कानूनी तरीके से बाहर भेजे गए और हर वर्ष 48 से 63 हजार करोड़ रूपये बाहर गए।

किसान की कठिन मेहनत से पैदा अनाज के भंडारण की भी उचित व्यवस्था नहीं हो पा रही है। करीब 190 लाख टन अनाज मात्र पन्नियों से ढ़का है। हर वर्ष 58 हजार करोड़ रूपये का अनाज, फल तथा सब्जियां बर्बाद होने की बात सरकार ने स्वंय मानी है जबकि गरीब भूख से मर रहा है और किसान विरोधी नीतियों की मार झेलते हुए पिछले एक दशक में 65 हजार किसान आत्महत्या करने पर विवश हुए। सरकार भावी चुनाव के मद्देनजर लोकलुभावनी नीतियां बना रही है जो किसी हालत में पूर्ण ना होने की आज से ही आशंका है।

आज हुक्मरानों द्वारा विशेष आर्थिक जोन (एस ई जैड) तथा स्टार्ट–अप के नाम पर किसान की भूमि औने–पौन भाव पर खरीद कर बड़े घरानों को सौंपी जा रही है जबकि दीन बंधु चौधरी छोटू राम ने किसान कामगार के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए 1943–45 के दौरान सर सिकंदर हयात खान मंत्रीमंडल में बतौर राजस्व एवं कृषि मंत्री लाहौर में किसान कोष की स्थापना की थी और वे अपने वेतन से गरीब व जरूरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए वजीफा व आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। किसान के हित के लिए वकालत करते हुए चौधरी छोटूराम वायसराय तक से भिड़ गए। उन्होने कहा था – "नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।" गरीब–मजदूर–मजलूम–किसान की लड़ाई लड़ते हुए वे भगवान को प्यारे हो गए और आज किसान रो–रो कर चौधरी छोटूराम को पुकार रहा है–एक चांद (दीनबंधु) बता दे तुम बिन तारों (किसानों) का क्या होगा, तुम तो छोड़ गए हम सारों (गरीब–मजदूर) का क्या होगा?

आज किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बिमारी के बचाव हेतू केन्द्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्र सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटूराम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटूराम को सच्ची श्रृद्धाजंलि दी जा सकती है। इस कोष से किसान–मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ–साथ आज कृषक–मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीनबंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनके ग्रामीण समाज, किसान कृषक–मजदूर वर्ग के विकास का स्वपन्न साकार हो सके।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व मेजर (1971 भारत-पाक युद्ध के योद्धा),
पूर्व पुलिस महानिदेशक हरियाणा, एक किसान व
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति ।

Escape of Subhas Bose to Germany and Japan

R. N. Malik

Subhas realised that both the provincial and central governments were bent upon eliminating him politically and keep him chained in the jails the moment he spearheaded any movement big or small. He had already spoiled his relations with the senior leaders of Congress. Formation of Forward Block forum within Congress had proved to be a damp squib. Therefore he thought of escaping to some country from where he could arouse the feelings of urge for freedom and fight for it. He also felt that only 60000 Britishers were ruling India simply because of the unflinching loyalty of Indian policemen and soldiers in British Indian army. Being a socialist and a rebel leaders, he was known in the top brass of Russian leadership. So after a week of his detention at his home, he decided to escape from India to a foreign land preferably to Russia or Italy or Germany to start the freedom struggle from abroad. So on 22th December, he called Sisir Bose his young nephew (the third son of Sarat Bose studying in the third year of M.B.B.S. course) and confided in him to assit him in his escape plan.He got the promise that he would keep the proposal in strict confidentiality. It was a moral predicament

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

for Sisir to assit the uncle in an escapade without the knowledge of his father. The rough roadmap given to him was to leave the home arter midnight and proceed to a distant place from Calcutta along the Howrah-Delhi railway line where Delhi-Kalka mail has a stoppage. He was also asked to think about the exit gate and the mode of transport. Finally it was decided to leave the home at midnight by car upto Gamoh and stay at the house of his another nephew Asoke during the day and board the Kalka mail at night and reach Peshawar and then go to Kabul by any available means. The date of escape would be decided when every arrangement was put in place particularly from Peshawar to Kabul. All the letters written by Subhas were intercepted at the main post office and read and carbon copies kept in the file. This process helped Subhas to hoodwink the police. For example, he started writing about his return to jail after his recovery. He invited Akbar Shah of N.W.F.P. from Peshawar to discuss with him the arrangements of holding a conference of Forward Block. He wrote to Gandhi Ji offering his support for initiating a Non-co-operation movement. Gandhi Ji replied on December 29 saying , " Until one of us converts the other on the question on best way to pursue the independence movement, we must sail in different boats. You are irrepressible whether ill or well. Do get well before going in for some fireworks." These letters made the police authorities to think that Subhas was looking for recovering the lost ground and feeling frustrated.

Subhas cabled Akbar Shah (an activist and member of Forward Block) to come to Calcutta. He arrived on 16 th December. Subhas asked him keep the journey plan from Peshawar to Kabul ready. Akbar helped Sisir to purchase Sherwani and fez cap and other items for Subhas that were needed to make him look like a Maulvi and then went back to Peshawar. Sarat returned from Kalimpong on 25th December. Subhas told him everything about his escape plan. It is not precisely known from any source how Sarat reacted to the escape plan as it involved many risks and safety to Subhas's life. Anyhow, he approved the plan with slight modifications. Sisir purchased all the items required for his journey including copies of Bhagvat Geeta and Quran. Sisir selected the car ti be driven for the journey that was registered in his name. It has been imported from Germany and was named as Wanderer. Sisir even tested its worthiness. Sisir also observed the behavior and pattern of taking rest of the policemen posted around his house at night. Subhas wanted to seek the blessings of his mother and bhabi (Sarat's wife) before departure but could not do so because of maintaining secrecy. On the night of 16th January 1941, Sisir drove Subhas Bose in Wanderer at 1-30 a.m. and proceded towards Dhanbad. They reached there around 8 in the morning. From Dhanbad, they reached Burari at 8-30 a.m. at Asoke's (elder brother of Sisir) House. Both rested during the day. They took early dinner in the evening and took the car and reached the station of Gamoh.

The train arrived little late on the station and Subhas boarded the train and there was an affectionate send off between the uncle and the nephews. The train reached Delhi and Subhas got down and took up the seat in Frontier mail to reach Peshawar. He reached Peshawar the next day in the evening of 19th January Peshawar.Subhas in the guise of Ziauddin got down at cantonment station. Akbar Shah was already there at the exit gate and could recognise Subhas and and asked him to sit in a tonga. Akbar took another Tonga and both reached Taj hotel. Subhas stayed in the Taj for a night and then Akbar took him at the residence of Abad Khan who was a political activist. He stayed there for a few days and changed his dress to look like a deaf mute pathan because Subhas did not know the local language.

Akbar had brought two members of Forward block namely Mohamad Shah and Bhagatram Talwar who took the responsibility to take Subhas to Kabul. They started their journey on 26 th January the declared independence day of India. They hired a car along with a tribal guide that dropped them at the India-Afganistan border. Bhagatram changed his name to Rehmat Khan. Mohamad Shah did not accompany them further. Now the two travellers along with the tribal guide started their rugged undulating journey with steep inclines on foot (sometimes rode a mule depending on its availability) to reach Peshawar -Kabul highway in two days near village Girdhi. They stayed at night in village hamlets . The tribal guide was sent back. Rahmat Ali and Subhas managed to get a truck ride that dropped them at Jalalabad township late night on 28th January. Next-day, they travelled to a nearby shrine at Ada Sharif and made contact with a political associate Haji Mohamad Amin. They now started their journey on 30th by tonga and truck rides and reached Kabul the next day.

Meanwhile a drama was enacted at Calcutta that Subhas had disappeared from the house located at Elgin road. The news was published in two important newspapers Amrit Bazar Patrika and Hindustan Standard on the morning of 27th January. That day, Subhas had to appear in the court in a pending sedition case. Reading the disappearance news, policemen in large number encircled the house. They made enquiries from everybody. Sisir and his father expanded the renunciation theory. A policeman reported that he must have gone to Pondicherry to live with his fried Dilip Roy in a secluded place. What clinched the issue was the pitiable condition of Subhas's mother of who was thoroughly distraught and groaning in grief about the uncertain fate of her dearest son.

People started making conjectures. Some said, he might have gone to Russia; others talked of his journeying to Japan etc. Sarat responded the query of Gandhi Ji by cabling,"Circumstances indicate renunciation." The Viceroy was furious at the Governor and Governor was furious at officers of ghe intelligence department. Only one police officer Janviron

disbelieved all the theories of disappearance. He believed Subhas must be plotting somewhere to make an assault on the empire from a remote control.

Rehmat Khan alias Bhagatram and Subhas stayed in an inn. It was a filthy place with the smell of excreta of camels. Subhas developed the problem of loose motions. An Afgan policeman started questioning them and he had to be bribed with money and golden wrist watch of Subhas that was gifted by his father. Bhagatram was able to contact a known Indian Uttam Chand Malhotra who agreed to allow them to stay in his house. Bhagatram was unable to make any contact with Russian embassy. Finally Subhas decided to go to German embassy because it was Germany and not Russia that was at war with Britain. Earlier Subhas was very critical of Hitler and the deeds of his Nazi party. So on 5th February, Subhas barged into the German embassy and met the Ambassador.

Both Germany and Italy had Indian soldiers as prisoners of war.The German Minister in Kabul embassy Hans Piglet cabled the German Foreign Minister Ribbentrop about the arrival of Subhas and his intention to reside in Germany to launch a campaign against Britain for Indian independence and he had been advised to contact Russian Ambassador on his behalf. Russian authorities were not helpful initially as they disbelieved the story of Subhas. Italion embassy was also contacted to use its good offices to allow Subhas to Berlin via Russia. Bose was advised to stay in bazar area to escape the attention of Afgan security system. He was also advised to keep himself in contact with Herr Thomas of Siemens company of Germany and a message would be sent once all was clear. The message was received after a fortnight on 22nd February. Subhas and Bhagat Ram were feeling desperate and thinking of other risky ways to reach Germany. Bose was asked to contact Italion Ambassador Pietro Quaroni. Subhas reached there in the evening and discussed his future plans with Quaroni for a long time. Quaroni was greatly impressed with Subhas and called him able, intelligent, full of passion and most realist among all of the Indian leaders. He used his good offices to get the concurrence of Soviet authorities to grant Subhas a transit visa to allow Subhas to pass through Russian territory to reach Berlin. On 10 th March, Mrs Quaroni came to the shop of Uttam Chand Malhotra and delivered a message for Subhas that he would be given the passport of Orlando Mazzotta, an Italion courier with his photograph pasted on that passport and he should get a new dress for the purpose. On 17th March, he was shifted to the house of Signor Crescini, an Italion diplomat.Subhas wrote letters for his brother and some of his close friends and asked Bhagat Ram to arrange their delivery to his home.

After acquiring the passport under the name of Mozzatto, Subhas was facilitated to travel by car from Kabul to Samarkand and from there to Moscow by train and then by air to Berlin on 2nd April 1940. This extremely risky and hazardous journey from Calcutta to Berlin was completed in 77 days.

In Kabul, Bose had discussed with Italion Ambassador his plans to bring political revolution from a foreign soil and the Ambassador Quaroni was greatly impressed with his planning and articulate arguments. So he sent a favourable report of Bose's planning to Rome. Quaroni more than anybody else the need to take India out of England's hegemony from where she was driving great strength (men and materials) to sustain the war and if that umbilical chord is cut out, then the battle would be half won. The roadmap prepared by Bose was the one solid step in that direction. Rome did not respond to the Quaroni's suggestion. Germany thought that blockade of Suez canal or the mediterranean sea at its narrowest width between Spain and Algeria was a better option. So Hitler considered an attack on British forces under General Rommel the best bet.

After a week of his arrival in Germany, Bose submitted a detailed note to German Foreign Minister Ribbentrop detailing how to expel Britishers from India. He suggested a truce between Japan and China with the help of Russia and freeing Japan to attack Singapore the naval base of England in Asia and then defeat imperial forces in other countries like Indochina. Bose was lucky to have a meeting with Ribbentrop on 29th April at the Imperial hotel in Vienna. Ribbentrop told Bose plainly that it was premature to act on his plan and Germany at that stage could not give a public statement in support of Indian independence. However he told Subhas that his plan had not been rejected. The main reason was that treatment about India had been entrusted to Russia and Germany had made up its mind to attack Russia and this decision had been kept in secrecy at that time.

Subhas sent another memorandum to German foreign office asking the axis powers to make a clear declaration of their policies in respect of freedom of India and Arab countries. He also urged that it was essential to maintain the status quo of German-Russo treaty in order to to exterminate Britain's power and influence . Now it was too late to make this suggestion.He also suggested that Indian legion (assembly of Indian soldiers taken as prisoners of war in Italy and Germany) should be helped to pass through Russia and Afghanistan to wage a war against the British India as it would trigger revolt by freedom fighters and soldiers of British Indian army. German authorities ignored his suggestions as un implementable in the given circumstances. Bose was in Rome when he learnt that Germany had attacked Russia on 22nd June 1941. Initially, German forces annihilated Russian resistance and passing through Russia like a knife through the butter. By September, 7lakh soldiers lost their lives and an equal number were taken as prisoners of war. Bose was shocked beyond measure

because all his plans of attacking India from Afganistan side came to a naught. He returned to Berlin on 17th July and wrote to Ribbentrope that people of India would not support the German attack. He also told him that the attack would prove disastrous for Germany in the long run and it happened exactly that in 1945.

Disappointed Subhas now decided to form the Free India Centre in Berlin with the help of Indian exiles, students and Indian prisoners of war. Persons like A.C.Nambiar, Abid Hasan, N.G.Swamy, N.G.Ganpuley, K.M.Bhat, M.R.Vyas, P. B.Sharma, Pramod Sengupta, I.K.Bannerji, A.M.Sultan, Habibur Rehman and Girija Mookerjee joined hands with him. Bose had met some them during his earlier visit to Europe four years earlier. German government had created a special India Division in the foreign office. It was headed by two brilliant scholars namely Adam Trot and Alexander Werth. Both of them left leaning intellectuals.Subhas was one such intellectual. That is why they helped him a lot. Subhas had been given the status of an ambassador and was addressed as His Excellency and alloted a big house near Berlin. Emilie too started living with him. Indian prisoners of war had been held in a camp near Dresden. Bose now known as Neta Ji came to the camp and persuaded them to form the Indian Legion or the Indian liberation army. Recruitment into the Indian legion was entirely voluntary. A larger number of Indian prisoners of war were held in camps in Italy. They were also transferred to Germany at Dresden. Free India Centre was formally inaugurated on 2nd November 1941 at Liechtenstein near Berlin. The tricolour flag of Congress was adopted the national flag with lion replacing the Charkha at the centre of the flag. Later the lion was replaced with Asoke Chakra. Ji Hind was adopted the greeting symble. The song Jan Gan Man was adopted as the national anthem.

Two important events took place in the month of December 1941: one in Calcutta and another in Japan. The coalition government in Bengal was reconstituted with support of Sarat Group. Fazlul Huq remained the Premier and Sarat Bose the Home Minister. Muslim League was dumped. A telegram from Japanese Foreign office to the Ambassador of Japan in India that showed the message of Subhas to Sarat Bose was intercepted. On 11 December, Sarat, the Home Minister, was arrested and kept as prisoner at a place in south of India during the war duration. Japan bombed the American naval base at Pearl Harbour on 7th December. America declared war against Japan and England too followed suit. Churchill became very happy and became sure of his victory because America was now a part of World War and would fight along with the Allies. Japan attacked Singapore on 15th February 1942 and captured without firing a single shot. An army of 70000 soldiers and officers surrendered before the Japanese forces. How it happened is still a mystery.Subhas made his open broadcast to India on 19th February , " This is Subhas Chander Bose speaking to you over the Azad Hind radio.The fall of Singapore means the collapse of British empire, the end of iniquities regime symbolising the dawn of a new era in Indian history." Indians were extremely delighted to hear the voice of their leader after a gap of one year. Gandhi Ji also started Bose for his dare devellary.

Japanese forces reached Rangoon on 29th February and chased Britishers frim there. They ran into India with all available means. They left Indians unprotected. Many Indians also left Burma out of fear and came on foot to India through jungles as there were no roads. Thousands died of hunger on the way. Gandhi Ji felt that Britishers would run the same way if Japanese entered India. Bose hailed the prospects of Burmese freedom. Japanese made Ma Bawa as the Prime Minister of Burma. Army Commander Archibald Wavell said that India was under threat of the enemy and her frontiers were from Suez to Hong kong. Subhas derided the propaganda of Wavell saying," Britain brought India into war in September 1939 and now she was bringing war into India." Gandhi Ji believed that India could be spared the devastation of war if the British left India he was confident of his ability to negotiate with the Japanese who would have no reason to enter India if India was rid of British presence. As a result ,Gandhi Ji asked the Britishers to quit India on 8th August 1942 and the movement was popularly called Quit India Movement. What Subhas wanted Gandhi Ji to do in 1939, he did it in 1942. Gandhi Ji and all the top leaders of Congress were arrested at 4 a.m. in the early morning of 9th August. When people came to know that their leaders had been arrested, they exploded and came on the streets in the form of a surge wave. They broke railway tracks, telephone wires, burnt post office buildings and damaged other public installations. Police resorted to firing. Even military was called at many places. As per government admission in House of Commons, 1000 people were killed during police firing. Actual number was more. The rebellion was brought under control after two months. The Viceroy admitted that Raj had never seen the national upsurge of that scale since 1857.

With Japanese at the Burmese border and India in turmoil due to the prospects of Quit India movement, Churchill came under pressure from American President Franklin D. Roosevelt and the members of Labour party in England to do something to conciliate with Indian leaders. Consequently, Churchill sent Stafford Cripps on a mission of India in March 1942 with such proposals that would not be acceptable to Indian leaders and accordingly the Mission failed. Gandhi Ji had made the famous statement by telling Cripps," If these are your proposals, then take the first flight to England. The proposals were like the post dated cheque of a falling bank." As expected Cripps returned to England empty handed and

Churchill told Roosevelt that Indian leaders could never agree to one single solution and any effort to placate them was bound to meet with failure and Churchill shut the doors for any further negotiations on this account.

Since October 1941, Japanese Ambassador in Berlin Oshima Hiroshi and military attache Colonel Yamamato had been holding meetings with Subhas Bose. He made his broadcast on 19th February," I should not be where I am. I have to go to Rangoon, soon to be freed by Japanese, to make it a base for his Indian nationalist propaganda and the spring board for Indian nationalist action." His friends in German foreign office like Adam Trot prepared the ground for to announce the draft declaration in support of Indian freedom. The declaration drafted on 22nd February contained everything that Bose wanted.

"Germany ,Italy and Japan are convinced that Indian nation will break the political and economic bonds of British Imperialism and then master of its own fate will carry out sweeping transformation of its national life for the lasting benefit of its own people and as contribution to the welfare and peace of the world. It is no concern of the Tripartite Powers what form the Indian people , after their liberation , will in future , will give to their interior political organisation . It is a matter to be decided upon by the people themselves and their leaders what constitution is the most suitable for their country and how much it is to be put into practice. The Tripartite Powers are concerned to end --on a basis of social justice-the misery and poverty of the Indian people, and to see the exploited masses assisted to a proper standard of li ing as well as to employment and prosperity ."

There cannot be a better statement than this. British government never talked of eradication of poverty and economic developed to bring prosperity to India. Chains of poverty were harsher and more painful than the chains of subjugation.

But this draft was not approved by Hitler. Another amended draft was put up to him. That too was rejected. This was because Hitler was jealous of Japanese swift and spectacular victories in South East Asia. Subhas was craving for going to Rangoon from where, being closer to India, he could excite Indians to be prepared for a fight against the British Imperialism more effectively. In March,1942,B.B.C. relayed the news that while flying to Tokyo, Subhas had died in the. air crash.Family of Subhas did not believe this news. Fearing that his old mother might not die of shock, Subhas immediately refuted the announcement on the Azad Hind Radio saying that he was alive and kicking. Finally his meeting was arranged with Hitler on 29th May. Bose's main demand in the meeting was to make arrangements to return to Asia. Hitler told him that journey was risky by art.

However he could place his submarine at his disposal that would take him to Bangkok. Nothing gainful come out of the meeting except the journey by submarine. Hitler advised Subhas not to rely wholly on Japanese authorities. He talked more about expelling Britishers from Egypt and General Rommel had already launched an offensive against the British forces. At the end of the meeting ,Hitler wished Subhas well during his long journey. There are many versions about the discussions of the meeting with Hitler. But crux of the meeting ,as spoken by Girija Mookerjee , was that it was a big disappointment for Bose and the Indian cause.As already mentioned, Gandhi Ji launched Quit India movement on 8th August 1942. Subhas could see that many casteist parties were not supporting the movement i.e. Muslim League, Akalis Dal, Hindu Mahasabha and Unionist party of Panjab. Subhas started voicing his concern for this negative attitude of these regional parties on Azad Hind Radio that had become very popular in India. The radio broadcast for four hours daily with very powerful transmitters in seven regional languages. Another voice as Azad Muslim radio also hit the airwaves. People listened to the voice on 1.20 lakh radio sets in India clandestinely. Habibur Rehman and A.M.Sultan spoke on this channel to exhort Muslims to take part in the movement enthusiastically.

While arrangements were being made for the journey of Subhas in consultation with Japanese authorities, Subhas started paying more attention of Indian Legion. The number had grown to 4000. They were receiving further training in warfare. What use they would be put was not clear to anybody. The initial planning was that they would attack Britishers in India from Afganistan side . Subhas believed that once Subhas led the attack with Indian Legion, Indian soldiers in British Indian army would go in for mutiny and join the Legion. He still maintained that thinking when he formed Indian National Army in Japan. Now the option of an attack from Afghanistan side was closed, the utility of Indian Legion was not understandable. The good thing for the soldiers (prisoners of war) of the Legion was that they were getting better treatment and they could feel that they were no longer the prisoners. But they were equally perplexed about their future because they had disowned the oath administered in the Brtish Indian army and they could not go home till 'India became free and still were not sure how they would be treated by the. new dispensation. An effort was made by Italion government to send Subhas by air to Rangoon but the planning could not mature once because of leakage of information and secind time due to the the dispute in finalising the flight path between Rome and Rangoon.

The failure of plan to reach Rangoon by air proved a blessing in disguise. Subhas was blessed with a daughter on 29th November 1942.She was named Anita. Subhas felt proud

to be a father and could more days with Emile and little Anita before his another long hazardous journey to Japan and Burma. He celebrated his 46birthday on 23rd January followed by a bigger celebration on 26th January as India's independence day. The journey by submarine was to start on 8th February from a German sea port Kiel. The German submarine was to take Subhas upto Medgaskar from where he would be picked by a Japanese submarine to Sumatra. Subhas was allowed to take one co- passenger with him. He picked Abide Hasan.Bose and Hasan reached Kiel near Hamburg on 8th after bidding goodbye to Emilie and members of Free India Centre. They boarded the submarine U-180 early in the morning of 9th February 1943. Captain Musenberg welcomed them aboard.

Bose and Hasan did not have any knowledge of the hazards of a submarine journey nor they bothered to know. They did not enquire about the quality of food to be served. Abid Hasan recalled that," I was quite fascinated by the romance of travelling under the sea in a submarine. But when I entered the submarine and sat for few minutes, the entire charm was gone. The stench of diesel oil permeated the air, the food and the blankets. The atmosphere was suffocating." The meal consisted of tough greasy meat and damp breads. Hasan could find a bag of rice and lentils in the kitchen. Fortunately he knew cooking of rice and dal and they had to live on that combination throughout the journey. The submarine travelled at a speed of 18 knots on the surface (at night) and 7.7 knots under the sea. Subhas started writing his updated autobiography ' Indian Struggle' in long hand and Hasan did the typing. He completed the manuscript by the time the U-boat reached the Spanish coast for refueling. The manuscript was sent to Germany through some messenger. He started planning about the formation of Azad Hind Fauz and its detailing and held detailed discussions with Hasan during the entire period of the remaining journey. The U-boat had a mandate to attack enemy ships. It fired a British ship on April 18 and ship went down in flames. In another incident, the sailer narrowly saved the boat from the attack of a British ship. Subhas and Hasan remained unperturbed and the Captain advised the crew to emulate the example of Bose and Hadan in such situations.

Meanwhile, the Japanese submarine I-29 had started its journey from Penang on April 20,1943. After six days the two submarines spotted each other 400 nautical miles off the coast of Madagasker.The sea was very rough making the transfer of Subhas and Hasan impossible. The transfer took place after two days on 28th April. An astonishing military feat was accomplished. This kind of transfer had never occured during the war. The 77days voyage was extremely risky because the mortality rate of German U-boats had increased to 80% after developing of the intercepting technology by England. The German seaman took pictures during voyage and gave these to his mother later instructing her that someone from India would come one day to receive these. Unfortunately, he was killed during his next mission. The German boat took 9 days to reach Sebang harbour near Sumatra. Col. Yomamutu received Subhas and Abid Hasan at the harbour. Subhas took rest for few days and reached Tokyo in middle of February.

राजा नाहर सिंह द्विशताब्दी जयंती समारोह

– सूरजभान दहिया

एक कहावत चलती है जाट लैड के बीच कि शांति काल में बेटे पिता को और युद्धकाल में पिता अपने बेटों की अंत्येष्टि करते हैं। जाट लैंड के खून में है देश के लिये जान पर खेल जाना– 1857 की जनक्रांति में जब हाली बाप और सैनिक बेटा धरती मां की आजादी के लिये युद्ध में कूद पड़े और लड़ते–लड़ते शहीद हो गये तो कौन किस की अंत्येष्टि करता, बस जाट लैंड उनके खून की लाली से स्वयं अंत्येष्टि हेतु अपने रणबांकूरों को विदा करने उठ खड़ी हुई और किसानों के धर शहीदी की नई पौध अंकूरित कर गई। धरती माँ तुझे सलाम–इतिहास सदैव बहादुरों का लिखा जाता है विस्मृति के गर्भ में खो गए हैं 1857 स्वतंत्रता संग्राम के 'नरमेघ' के असख्य जाट सेनानायक। पाठक सोचेगें कि यह इतिहास तो उन्हें पता है लेकिन मेरी यह प्रबल धारणा है कि जो कौम अपने इतिहास को ठीक से याद नही रखती उसका गर्त में जाना निश्चित है। इसलिये अपने सही इतिहास को आपके सामने लाना में अपना नैतिक दायित्व समझता हूँ। 1857 की जनक्रांति में कितने जाट देशभक्त शहीद हुये? 1857 के बाद कितने जाट स्वतंत्रता मतवालो को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया? कितनो को मौत के घाट उतार दिया गया? कितनों को रोड़रोलर से सड़कों पर कुचल दिया गया? यह बड़ी लंबी सूची है और इस क्रांति से अंग्रेजों को अहसास हो चुका था कि जाट कौम की पराक्रमता हमें भारत छोड़ने को मजबूर करदेगी? यद्यपि बाद में अहिंसा के पुजारी महात्मागांधी ने कहा – "शांति–शांति" लेकिन भगतसिंह ने कहा– 'क्रान्ति–क्रान्ति'। भगतसिंह को युवानरेश नाहर सिंह को फांसी का फंदा चुमने से पूर्व दिया उद्घोष स्मरण था – "यह दीपक बूझ न पायें" आओ उन असंख्य शहीदो को नमन करे जिन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को प्रकाशित किया – 'तेरा स्मारक तू ही था, तू खूद अमिट निशानी थी।'

"जला अस्थियां बारी–बारी जिन्होंने छिटकायी चिनगारी।

जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर, लिये बिना गरदन का मोल।
कलम आज उनकी' जयबोल"

विश्वविख्यात इतिहासकार डारस्म्पिल ने 1857 जनक्रांति को 150वीं वर्षगांठ पर जब 'लास्ट मुगल एम्पायर' पुस्तक लिखी तो वह अति दुखित होकर यह टिप्पणी करने पर न रह पाये – "1857 का स्वतंत्रता संग्राम तो सही मायनों में दिल्ली से सटे जाटलैंड में लडा गया बाकि तो साईड–सो था और इस संग्राम के केवल और केवल एक महानायक थे – राजा नाहर सिंह। यहां जाटों ने जो वीरता पूर्वक होली खेली, वह विश्व के सभी युद्धों से ऊपर तथा अद्वितीय थी। मुझे भारी मन से कहना पड़ रहा है कि जाटकौम इतनी बहादुर होते हुये क्यों सुस्त और सोई हुई है कि उसका गौरवपूर्ण इतिहास राष्ट्रीय अभिलेखाकार तथा जाटलैंड के भिन्न जिलों के तहसील रिकार्डों में धूल में दबा पड़ा क्यों है तथा दिनोंदिन नष्ट हो रहा है? क्यों राजा नाहर सिंह की भूमिका इतिहास के पन्नों से गायब है? मैं परेशान हूँ कि मुझे कोई संवदेनशील जाट बुद्धिजीवी आकर इस कुताही का जवाब देने नहीं आता है? इन्तजार की घड़ियां दिनोदिन लंबी होती जा रही हैं पर जाटकौम को अपनी कुताही का अनुभव नहीं हो रहा है?"

मैं भी न जाने कितनी बार चेता चुका हूं कि विश्व के महानराष्ट्रो अमेरिका, रूस, चीन तथा भारत के इतिहास का अवलोकन कीजिए? सभी राष्ट्रों ने केवल भारत को छोड़ कर अपने किसानों के इतिहास को स्वर्णमयी पृष्ठों में सुशोभित किया है? भारत में क्यो किसान इतिहास अर्थात् जाट इतिहास को हाशिये में डालकर साजिश रची गयी है वह ज्यादा देर तक दबी नहीं रह सकती? महाननरेश – युवाशक्ति नाहरसिंह का जन्म 6 अप्रैल, 1821 को हुआ था तथा उनकी जन्मशताब्दी 1921 में पड़ी, पर हम उनको स्मरण करके उचित सम्मान नहीं दे पायें। क्योंकि अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह को उनकी जन्म शताब्दी में स्मरण करके उन्हें जीवित करना भारी पड़ने का भय था। बल्लभगढ़ नरेश की 150वीं जयंती 1971 में थी, परंतु हम उस अवसर पर भी जयंती समारोह न कर पाये क्योंकि हम अपने इतिहास के प्रति सजग नहीं हैं। अब उनकी द्विशताब्दी जयंती 2021 में आ रही है, मुझे इसलिये कौम को समय से पहले ही द्विशताब्दी जयंती समारोहो पर तैयार रहने के लिय आहवान करना पड़ रहा है।

उपलब्ध दस्तावेजों से विदित होता है राजा नाहर सिंह को खाप नरेश का सम्मान प्राप्त है, वे प्रत्येक खाप पंचायतों में शामिल होते थे तथा भारत माता को स्वतंत्र कराने का आहवान करके खापों को सुदृढ़ करने हेतु प्रयत्नशील रहते थे, उनके दरबार में खापों का आना जाना होता रहता था। सर्वखाप पंचायतों को अब यह दायित्व निभाना होगा कि वे राजा नाहर सिंह की द्विशताब्दी जयंती भव्य रूप से मनाने के कार्यक्रम बनाये।

राज मोहन गांधी की कुछ समय पहले एक पुस्तक छपी थी– 'ए टेल आफ टू रिवोल्ट्स' जिसमें भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम–1857 तथा अमेरीकी सिविल वॉर–1865 का तुलनात्मक अध्ययन है दोनों के महानायक हैं– राजा नाहर सिंह तथा अब्राहिम लिंक। ये ऐसी महान विभूतियां हैं जिनका बलिदान इतिहास को सदैव गौरवांवित करता रहेगा। ये ऐसी अद्भूत मानव शक्तियां थी जो 19वीं सदी में उज्जवल मानव इतिहास प्रदान कर गई– ''प्रत्येक मानव को स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकर है।'' इतिहास क्या है? चंद ताकतवर लोगो (रईस, हुक्काम) द्वारा आयोजित साजिशों का एक लंबा अर्थहीन सिलसिला? या चंद सामाजिक परिस्थितियों के घात–प्रतिघात द्वारा उभरने वाला मानव संघर्षों की श्रृंखला जिसमें कोई अर्थ ढूंढने की कोशिश की जा सकती है? मैं तो केवल इतना जानता हूं कि इतिहास के जिन परिच्छेदों ने, इतिहास के जिस–जिस दौर मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी है, वहां मुझे गहराई में एक ही चीज मिली है– ट्रैजेडी, गहरी मानवीय ट्रैजेडी जो किसान के जीवन के इर्दगिर्द घूमती दिखाई देती है– इसे आप जन इतिहास कहे या सच्चा इतिहास। यह कैसी विडंबना है कि चाटूकार इतिहासकारों ने एक ही परिवार पर तो हजारों पुस्तकें लिख डाली, पर असख्य परिवारों ने जिन्होंने इतिहास को रचा उन पर एक भी पुस्तक लाईब्रेरी में नजर नहीं आयेगी, क्यों? एक और इतिहास के कौतुहल को समझिये। इतिहास में गांधी जी की बकरी की रस्सी को तो भरपूर महत्व दिया है, परंतु बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह के फंदे की रस्सी या भगत सिंह जी के गले की रस्सी को इतिहास में क्यों गौरवमयी नहीं बनाया? हम इतिहास में सिकंदर महान के रूप में जानते हैं तो क्यों हम शिवाजी महान, रणजीत सिंह महान अथवा महाराजा प्रताप सिंह महान संबोधन करने को क्यों भूल रहे हैं?

सन 1837 में जब विक्टोरिया इंग्लैंड की महारानी बनी तो ईस्ट इंडिया कंपनी के 50 हजार कर्मचारी 9 करोड़ भारतीयों पर राजकर रहे थे। दिल्ली के आस पास का क्षेत्र अंग्रेजों ने 19वीं सदी के प्रथम दशक में अपने कब्जे में कर लिया था। वे किसानों पर असहनीय कृषि कर डालकर अत्याचार की सभी सीमाएं लांघ रहे थे। सन 1828, 1843 में किसानों ने अंग्रेजों के विरूद्ध बगावत दर्ज करा दी थी। बल्लभगढ़ रियासत के 16 वर्षीय युवराज नाहर सिंह बढ़ते अंग्रेजों के जुल्म से काफी व्यथित थे। उनके पिता महाराजा राम सिंह ने युवराज की मानसिक पीड़ा को जानकर उसी वर्ष कपूरथला घराने की राजकुमारी किशन कौर से नाहर सिंह का विवाह कर दिया। जब विवाह रस्म में अनेक राजे–महाराजे

म्यान में तलवारे लटकाये वहां उपस्थित थे तो नाहर सिंह ने अपने पिता से यह प्रश्न कर डाला– ''क्यो ये राजे–महाराजे बगैर तलवार के म्यान लटकाये हुये हैं? इसलिये तो हम अंग्रेजों के गुलाम हो गये हैं? महाराजा राम सिंह को युवराज की प्रतिक्रिया गहरी चिंता दे गई और वे डर गये कि कहीं गौतम बुद्ध की भांति युवराज का विवाह सकारात्मक न हो पाये?

महाराजा युवराज नाहर सिंह की सोच निर्भीक एवं देशभक्ति के कायल तो थे, परंतु उनकी छोटी सी रियासत अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिये तैयार न थी। सन 1839 में महाराजा परलोक सिधार गये एवं 18 वर्ष की आयु में 20 जनवरी 1839 को किसान पर्व बसंत पंचमी के दिन नाहर सिंह का राज्यारोहण हुआ। उन्होंने एक जन प्रतिनिधि के रूप में रियासत का प्रशासन सम्भाला न कि एक राजा के रूप में तथा रियासत के पंचायत प्रमुखों को आदेश दे दिये कि वे जनहिताये सक्रिय हो एवं अत्याचार का सामना करे। वे एक धर्मनिरपेक्ष एवं गणतंत्र शासक थे तथा उन्होंने मंदिर–मस्जिदे बनाकर जनमानस का विश्वास पाया। सन 1854 में कुछ अंग्रेज अधिकारी मेवात में घुसकर मेवात चौधरियों को पकड़ कर ले गये। यह सूचना मेवात खाप प्रमुख ने राजा नाहर सिंह को दी। दूसरी ओर तेवतिया पाल के चौधरी ने भी अंग्रेजो के प्रति असंतोष को शासक नाहर सिंह के सामने रखी। सन 1856 में दिल्ली के अलीपुर गांव में एक सर्वखाप पंचायत हुई तथा इस महापंचायत में अंग्रेजों के बढ़ते अत्याचारों पर गहन विचार–विमर्श हुआ। इसके पश्चात राजा नाहर सिंह ने एक खाप किंग के रूप में अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष करने का दृढ़ संकल्प लिया। वे अंग्रेजो के विरूद्ध एक सुनियोजित योजना के तहत एक व्यापक युद्ध करने की रूपरेखा बना चुके थे तथा एक मौके की तलाश में थे।

विख्यात इतिहासकार इरफान हबीब लिखते हैं कि खाप किंग की योजना से पहले ही 10 मई 1857 में अंग्रेजो के विरूद्ध एक ज्वाला दहकी जो दिल्ली आते–आते एक विस्फोटक जनक्रांति का रूप ले गई। गांव–गांव में नगाड़ों की चोट पर किसान दिल्ली की ओर कूच कर गये। किसान और किसान पुत्र सैनिकों ने लालकिले पर पहुंचकर 36 वर्षीय बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजो को भगाकर जाटलैंड में गणतंत्र शासकीय प्रणाली लाने का उद्घोष कर दिया। बल्लभगढ़ नरेश ने उत्तरी भारत के प्रमुख क्षेत्रों को स्वतंत्र करवाकर जनता सरकारें गठित कर दी।

पंजाब के तत्कालीन अंग्रेज मुख्य आयुक्त ने 1857 की जनक्रांति का जिकर करते हुये स्वीकार किया था कि– ''जब तक दिल्ली की कमान तथा प्रशासन बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह के हाथों में है तब तक हम दिल्ली को नहीं पा सकते।'' उनके प्रशासनिक संगठन, सैन्य प्रबंध, राजनीतिक विवेकता, अदम्य साहस और अलौकिक प्रतिभा तथा उनकी खाप शक्ति को देखकर मैटकाफ ने 'टू नैरेटिवज आफ म्यूटिनी इन दिल्ली' पुस्तक में लिखा है कि– ''दिल्ली का वास्तविक शासक राजा नाहर सिंह था और दिल्ली को पुनः पाने में अंग्रेज बिल्कुल असफल थे। राजा नाहर सिंह की सुदृढ़ सैन्य और प्रशासनिक व्यवस्था को देखकर हम अति चिंतित व भयभीत थे।''

अंग्रेज जब चारों ओर से राजा नाहर सिंह से परास्त हो गये तो उन्होंने एक चाल खेली। रणक्षेत्र में सफेद झंडे दिखाकर अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह को संधि प्रस्ताव भेजा तथा राजा को बल्लभगढ़ से दिल्ली में संधि करने का आवेदन किया। यह संदेश पाकर राजा अपने समर्पित 500 वीर सैनिकों के साथ दिल्ली की ओर चल पड़े। जब वे बदरपुर पहुंचे तो भारी अंग्रेजी सेनाओं ने उन्हें बंदी बना लिया। 9 जनवरी 1958 को राजा नाहर सिंह को चांदनी चौंक में फांसी दे दी। राजा नाहर सिंह ने फांसी का फंदा चुमते हुये कहा– ''दीपक बुझ न पाये''। हिन्द बसुंधरा मां को पराधीनता से मुक्त कराने का जो साहसिक दृढ़ संकल्प महान बल्लभगढ़ नरेश ने लिया वह भारत की अद्वितीय प्रथम पहल थी। 200 साल की गुलामी ने हिन्दुस्तानी को इतना निर्बल बना दिया था कि 'आजादी' जैसे सुंदर भाव उनके दिल और दिमाग से गायब हो चुके थे। राजा नाहर सिहं ने शक्तिशाली अंग्रेजों के विरूद्ध जो आजादी का बिगुल बजाया उससे विदेशी सत्ता भी चकित थी– '36 वर्षीय युवा नरेश का अपनी नियति का स्वयं निर्धारण का पवित्र संकलप। एक अद्वितीय स्वाधीनता पाने की मानसिकता, निःसन्देह एक अद्भूत विश्व ऐतिहासिक घटना। भारत माता की आजादी के लिये बलिदान हुये राजा नाहर सिंह को देशवासियों का शत्–शत् नमन।

हताश अंग्रेज इतिहासकारों ने 1857 जनक्रांति को म्यूटनी कहा, गदर कहा, परंतु वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक में इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना तथा आगे लिखा कि दिल्ली से अंबाला तक जी.टी. रोड पर प्रत्येक पेड़ पर शहीदों के शव यह उद्घोष कर रहे थे– 'भारत की स्वतंत्रता दहलीज पर आ गई है और इसे यहां तक लाने का श्रेय बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह को है।'' इस भावना को आगे बढ़ाते हुये बाल गंगाधर तिलक ने अंग्रेजों को चेतावनी दे डाली– ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे मैं पाकर रहूंगा।'' और आगे भगत सिंह ने रंग दे बसंती चोला का उद्घोष करके अपने पूर्वज राजा नाहर सिंह को याद किया और 'नाहर ज्योत' को प्रज्जवलित किया। नेताजी ने 1942 में 1857 के उद्घोष 'दिल्ली चलो' को पुनः जागृत करके वस्तुतः अंग्रेजों को भारत छोड़ने का आदेश ही दिया– ये अद्भूत ऐतिहासिक पल था।

बल्लभगढ़ नरेश के नेतृत्व में हजारों जाट परिवार स्वतंत्रता सेनानी बने और देश की स्वतंत्रता हेतु अपने प्राणों की आहुतियां दी फिर भी ये इतिहास के पन्नों से गायब हैं। हम झूठे इतिहास से ग्रस्त हैं, इसे दुरस्त करना होगा तथा सही इतिहास अर्थात जनइतिहास को सामने लाना होगा। ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध हैं कि 1857 की जनक्रांति में सैकड़ों जाट गांव उजड़े, असंख्य गांवों को अंग्रेजों ने जलाया, न जाने कितने गांवों को नीलाम किया। अब इस हकीकत को इतिहास में दर्ज करना होगा। राजा नाहर सिंह ने स्वतंत्रता सेनानियों को खाप पंचायतों की मीटिगों में जाकर आगे लाया फिर एक स्वतंत्रता आंदोलन का जन्म हुआ, इसी से ही हमें 1947 में आजादी मिली। स्वतंत्रता के पुरोधा महानायक नाहर सिंह की 'नाहर ज्योत' जलती रहे, जलती रहे, जलती रहे।

मातृभूमि की स्वाधीनता हेतु बलिदानी नाहर सिंह की द्विशताब्दी जयंती हर गांव में मनाई जायेगी तथा जाट समुदाय अपने इतिहास के प्रति सचेत होकर इतिहास के पृष्ठों में लिखकर गौरवांवित होगा। ये हमारी सुनहरी बेला है जिससे प्रेरित होकर हमारी भावी पीढ़ी यह कह पायेगी– 'हम स्वतंत्रता हेतु वीर जाट बलिदानी'।

प्रेम और सत्य की संघर्ष-कथा

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

यह लेखक अपने अब तक के अनवरत अध्ययन और अनुशीलक से यही कह सकता है कि 'वार एण्ड़ पीस' लेव टालस्टाय की युद्ध ओर प्रेम पर अब तक एक सम्पूर्ण गद्य रचना(उपन्यास) मानी जाती रही है। क्योंकि उसमें युद्ध की विभीषिका का बेवाक विश्लेषण है तो दूसरी ओर अपूर्ण प्रेम की दुखान्तिकी भी है। लगभग इन्हीं समस्याओं से जूझती एक रचना अभी–अभी हमारी नजरों से गुजरी है जोकि अमेरिकी गद्यकार हावर्ड फास्ट की औपन्यासिक कृति है। जिसमें एक अमेरिकी युवा पत्रकार द्वितीय विश्व–युद्ध का आँखों देखा वर्णन बयान करता है। वह युद्ध का मूल कारण आर्थिक लूट को ही मानता है। तो उसका परिणाम मानवता के महान–मूल्यों–दया एवं करूणा तथा प्रेम और सद्भाव की क्षति को ही देखता है। पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियाँ बेशक ऊपर से उदारता एवं शान्ति और जनतंत्र का नारा दे रही थी लेकिन उनका मूलोद्देश्य भी युद्ध के माध्यम से धन–लूटना ही था। भले ही जर्मन जातीय अथवा नस्ल की नाव पर भी सवार था। तो अमेरिका परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र था। हिंदी में अनुदित फास्ट का 'प्लैज' अथवा 'शपथ' कुमार मुकेश द्वारा अनुदित यह उपन्यास एक काल्पनिक गद्य–रचना ही है, तथापि वह यथार्थवादी इतिहास–बोध से भरपूर है जैसाकि उपर्युक्त पुस्तक के प्रस्तावना लेखक लाल बहादुर वर्मा ने भी यहाँ पर रेखांकित किया है– ''हावर्ड फास्ट ने मुझे क्रांतिकारी साहित्य ही नहीं, इतिहास की भी समझ दी है– इतिहास– बोध को समृद्ध करने के लिये हावर्ड फास्ट जैसा प्रतिबद्ध परन्तु यथासंभव वस्तुनिष्ठता का निर्वाह करने वाला ऐतिहासिक गल्प किसी भी इतिहास–पुस्तक से अधिक और उपयोगी है।''

इस उपन्यास का नायक ब्रूस नामक युवा पत्रकार द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारत में 'डेली वर्कर' जैसे अमेरिकी समाचार–पत्र और 'ट्रिब्यून' का भी संवाददाता बनकर आता है। वह बेशक ब्रिट्रिश लोगों के साथ रहता है और उठता–बैठता है लेकिन युद्ध और अकाल को देखने का कृष्टिकोण उसका उनसे सर्वथा ही भिन्न है। वह बंगाल के अकाल 1941–42 के लिए बिट्रिश साम्राज्यवाद को भी उसी भाँति साठ लाख बंगालियों की भूख से मृत्यु के लिए उत्तरदायी मानता है जैसेकि जर्मनी में हिटलर को उतने ही यहूदियों के निर्मम नरसंहार के लिए मानता है। इस मत–निर्माण में उसे बंगाली श्रमजीवी पत्रकार प्रो० अशोक चक्रवर्ती जैसे बुद्धिजीवियों से भी सहायता मिलती है। जिनको अंग्रेज–सरकार ने मरवा दिया था। उसी प्रकार से उनसे सम्पर्क स्थापित करने के कारण अमेरिकी पत्रकार को भी ब्रिट्रिश गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी देश–निर्वासन देना चाहता है, अथवा उसको उस समाचार–पत्र की नौकरी से ही निकलवा देना चाहता है। या फिर उसे कठोरता के साथ शारीरिक दण्ड़ ही दिलवाना चाहता है। लेकिन वहीं पर एक कम्युनिष्ट विचार–व्यवस्था से प्रभावित हिल हरमन नामक ड्राईवर उसको भारत से भागने में सहायता करता है। ब्रूस, युद्ध की समस्या और भारत के आकस्मिक अकाल जैसे विषय पर एक प्रामाणिक और दस्तावेजी पुस्तक लिखने के लिए अमेरिका के 'डेली–वर्कर' समाचार–पत्र से एक वर्ष का अवकाश भी ग्रहण कर लेता है। उसी के कार्यालय में उसकी भेंट एक परित्यक्ता आयरिश युवती पत्रकार मौली से होती है, जोकि उसी समाचार–पत्र की स्थानीय संवाददाता है और वामपंथी विचारधारा से ओत–प्रोत है। लेकिन अमेरिका में तब वामपंथियों को कहीं नाजियों से भी अधिक भयावह माना जाने लगा था। क्योंकि वे पूँजीवादी साम्राज्यवाद का प्रबल प्रतिरोध और समता का सबल समर्थन भी तो करते ही थे। जबकि अमेरिका और इंग्लैंड जैसे पूँजीवादी राष्ट्र, स्वतंत्रता (व्यक्तिगत) को ही सर्वोत्तम मानते थे। व्यक्तिगत रूप से अकूत–सम्पत्ति संचय के भी ये राष्ट्र प्रबल पक्षधर थे ही।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

बंगाल के अकाल में जबकि चावल व्यापारियों के गोदामों में सड़ रहे थे क्योंकि उनको उतने मंहगे मूल्य का कोई खरीददार ही वहाँ नहीं था। दूसरी ओर भूखे–नंगे निर्धन और निरीह लोग सड़कों पर अकाल काल के गाल में समा रहे थे। जब ब्रूस और अशोक चक्रवर्ती जैसे स्थानीय श्रमजीवी पत्रकार और प्रो० मजूमदार जैसे प्रगतिशील बुद्धिजीवियों ने यह आवाज उठाई थी। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से तो अंग्रेज सरकार ने बजाय खाद्यान्न व्यापारियों के बफर–स्टॉक पर छापे मारकर उस खाद्य–सामग्री को जब्त करने के लिए उन धनपशुओं को मोटा मुनाफा कमाने का स्वतः ही उन्मुक्त अवसर भी प्रदान किया था। फिर आलोच्य कृति के रचनाकार ने अपने नायक ब्रूस के माध्यम से एक रणनीतिक कोण और भी इस समस्या की पृष्ठभूमि में यह पाया है कि पूर्व से जापानी सेना के आक्रमण को विफल और कमजोर करने के लिए भी भारतीय जनता की कमर तोडना बिट्रिश साम्राज्यवादी राजनीति के लिए अपरिहार्य थाऋ ताकि भूखी–नंगी भारतीय जनता विश्वशुद्ध में जापान और आजाद हिन्द सेना के साथ कटिबद्ध होकर संग्राम सन्नद्ध न हो सके।

बस उसके इन्हीं क्रांतिकारी विचारों और निष्कर्षों से ही तो बिट्रिश–साम्राज्यवाद कुपित हो उठा था। उधर युद्ध में उसे हथियार बेचकर मोटा मुनाफा कमाने वाला अमेरिका भला अपने ही रक्तबंधु अंग्रेजों की इस कपटनीति का क्यों विरोध और उद्घाटन करते। अतएव अधिकाँश अमेरिकी पत्रकार जोकि स्वयं को स्वतंत्रता और उदारता एवं जनतंत्र जैसे मानव–मूल्यों के सजग प्रहरी समझते थे, उनके भी मुँह इस बात पर सिले हुए थे। ब्रूस के अमेरिका पहुँचने पर मौली के प्रति ब्रूस का प्रेमानुराग अनुदिन अटूट होता चला जाता है। वही उसे अमेरिका में चल रही साम्यवाद विरोधी आतंकी से परिचित कराती है। अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध का सारा श्रेय परमाणु बम डालकर जापान का समर्पण कराकर स्वयं ही हथिया लिया था। बावजूद इसके कि अपने दो करोड़ सैनिकों और नागरिकों की बलिदानी कुर्बानी देकर जर्मन के नाजीवादी जबड़े से विश्व–मानवता को मंगल मुक्ति रूस ने ही दिलवाई थी। लेकिन स्टॉलिन की जो बलाद् सम्पत्ति–अधिग्रहण । bolations for Private Property नामक जो क्रांतिकारी परन्तु हिंसायुक्त कार्यक्रम था, उसके आधार पर ही पूरा पश्चिम अथवा यूरोप उसका विरोधी बन बैठा था। इसीलिए अमेरिका में भी युद्धोत्तर काल में साम्यवाद और सोवियत संघ विरोधी विषैली वायु बह रही थी।

इस विषय में भूमिका लेखक श्री लाल बहादुर वर्मा का मन्तव्य मननीय है–''फास्ट के अधिकाँश गल्प की पृष्ठभूमि पश्चमी जगत् है, जिसके भूगोल–इतिहास पर उनकी अच्छी पकड़ है। देशकाल समकालीन हो या प्राचीन, विश्वनीयता इसीलिए उनके लेखन की आधारशिला है। 'शपथ' के एक हिस्से की पृष्ठभूमि बिट्रिश राज के अन्तिम दिनों का कलकत्ता है, जो न केवल न्यूयार्क के विपरीत ध्रुव पर था, उपनिवेशवाद की राजधानी स्वयं लंदन से भिन्न था, पर 'शपथ' का कलकत्ता उसके पात्र पत्रकार अशोक चटर्जी और (प्रो०) मजूमदार वगैरहा भी पूरी तरह विश्वसनीय है। सबसे दिलचस्प है युद्धकाल में भारत में बिट्रिश एवं अमेरिकी फौजियों का (नैतिक) आचरण। भारत में जनता पर आरोपित अकाल का वह पक्ष इस उपन्यास में उजागर है, जिसे प्रायः समकालीन रचनाओं में नहीं पाया जाता। दूसरी ओर कहानी का अमेरिकी पात्र जब अपने देश पहुँचता है, तो वहाँ पर भी उसकी भारतीय जनता के प्रति प्रतिबद्धता वहाँ की व्यवस्था को रास नहीं आती है और वह अमेरिकी राजनीति की कम्युनिष्ट–ग्रस्तता(ग्रंथि) से आक्रांत होकर भारी कीमत चुकाता है।''

अमेरिका में राष्ट्रपति टूमैन(हनोवर) के मन्त्रीमण्डल में शामिल गृहमंत्री मैकार्थी एक अलोकतांत्रिक और तानाशाह व्यक्ति है। वह साम्यवाद के समानता और स्वतंत्रता एवं उदारता जैसे जनतांत्रिक मूल्यों का घोर विरोधी है। वह गुप्तचर विभाग के साथ मिलकर एक 'अनअमरेरिकन–हाऊस' नामक गुप्तचर परन्तु उपर से दिखावे को नागरिक संस्था का गठन करता है। जिसके द्वारा उदारतावादी और मानवतावादी एवं समतामूलक मानव–मूल्यों में विश्वास करने वाले अमेरिकी तथा विदेशी नागरिकों को वैचारिक रूप से आतंकित करती है। उनके स्वतंत्र विचारों को प्रैस में प्रतिबन्धित करती है। ब्रूस, जो पुस्तक द्वितीय विश्वयुद्ध और भारत के अकाल पर लिख रहा था। उसको अमेरिकी गुप्तचर विभाग ने प्रकाशित नहीं होने दिया था और उसके पीछे पुलिस लगा दी गई थी। उसके द्वारा डेली–वर्कर जैसे साम्यवादी रूझान वाले समाचार–पत्र की स्थानीय पत्रकार मौली के प्रेम–प्रसंग को भी पुलिस और प्रशासन कहाँ पसन्द करता है, फिर भी उनका प्रेम अनन्य और अटूट है।

आखिर में अमेरिकी गुप्तचर विभाग एक सम्मन भेजकर ब्रूस को 'अनअमेरिकन हाउस' की एक न्यायपीठ के सम्मुख बुलवाता है। जहाँ पर वह उसे उसके साम्यवादी होने के विषय में पूछताछ करती है। जब वह ज्यूरी मौली के कम्युनिष्ट होने की हामी उससे भरवाना चाहती है तो वह प्रेमातिरेक के कारण ब्रूस उसके विषय में कुछ भी बोलने और बताने से स्पष्ट रूप से इंकार कर देता है। बस यहीं से उसकी दुखान्तकी और त्रसद–कथा आरंभ होती है। अतः न्यायालय की अवमानना के अपराध में उसे एक वर्ष की सजा हो जाती है। अब तक ब्रूस और मौली मित्रभाव से ही सहजीवन जी रहे थे और परस्पर में प्रेम का उन्मुक्त भाव से आदान–प्रदान भी कर रहे थे। लेकिन जेल में जाने से पूर्व ही मौली और वह दोनों विवाह के बन्धन

में बँध जाते हैं। हालांकि ब्रूस की माँ मिसेज बेकण मौली को पसन्द नहीं करती है, क्योंकि वह कम्युनिष्ट और निम्नवर्गीय आयरिश परिवार से भी सम्बन्ध रखती है। लेकिन ब्रूस, मौली के गृहनगर के एक गिरजाघर में जाकर उसके साथ विवाह रचा लेता है। फिर भी उसके उदारवादी विचारों वाले पिता डॉ० बेकन उसको अपना आर्शीवाद और सहयोग समर्थन भी देते रहते हैं। जेल जाने से पूर्व मौली को ब्रूस से मिलने के लिए उसकी पत्नी बनना जरूरी था।

अमेरिका की जेलों में जाकर ब्रूस यह अनुभव करता है कि तीस के दशक की मंदी की मार से उबरकर अमेरिका 40 ई० के दशक में बेशक एक सम्पन्न और विकसित देश कहलाने लगा था, लेकिन तदपि वहाँ पर निर्धनता और असमानता व्यापक रूप से व्याप्त है। इसीलिए जेलों में चोरों और जुआरियों से लेकर डकैतों तक की भरमार थी। जिनके बीच में केवल विचार–विरोधी होने के ही कारण उसको भी एक मास तक रहना पड़ा था। ओर कमरतोड़ शारीरिक श्रम भी करना पडा था। आखिर में एक महीने के बाद 'मिलवोग' नामक एक उन्मुक्त वातावरण वाली जेल में उसे बंद कर दिया जाता है। जहाँ पर सभी आधुनिक सुविधाएँ 'समाचार–पत्र' और पत्रिकाएँ तक उपलब्ध हैं। लेकिन सरकार विरोधी पत्र–पत्रिकाओं के प्रवेश पर वहाँ भी प्रतिबन्ध है। यहाँ पर ब्रूस को वर्कशाप में काम दिया गया है। उसका प्रभारी एक क्रूर और राक्षस प्रवृत्ति का व्यक्ति है जोकि बिना किसी कारण के भी अपने सहकर्मियों के साथ गाली–गलौंज और मारपीट भी करता है। एक दिन ब्रूस के साथ वही करने पर ब्रूस उसे पीट–पीट कर अधमरा कर देता है। अतएव उसने पहली बार जीवन में हिंसा का सहारा लिया था।

उधर उसकी पत्नी और प्रेमिका मौली उसके साथ निरन्तर अपना सम्पर्क पत्रचार द्वारा बनाये रखती है। ब्रूस भी अपने नये बंदी–जीवन के अचीन्हें रहस्यों से उसको पत्रेत्तर द्वारा अवगत कराता रहता है। उधर वह अपने माता–पिता के सतत सम्पर्क में भी बना रहता है जोकि उसको लेकर अत्यन्त चिन्तित और उदास रहते हैं। उधर मौली की भी सर्विस केवल कम्युनिष्ट होने ओर उसके सम्पर्क के कारण ही छुडा दी जाती है। लेकिन ब्रूस के पास जो जमा–पूँजी थी, उसी से वह निर्वाह करती हैॠ साथ में सेल्स गर्ल के तौर पर पार्टटाईम जॉब भी करती ही रहती है। उधर उसने उसी अन्तराल में ब्रूस बेकन की पुस्तक को भी तो प्रकाशित करा दिया है, जिससे कि अमेरिकी तथा कथित वैचारिक उदारता का दिखावा करने वाली सरकार और भी अधिक भयभीत हो उठती है, क्योंकि इस पुस्तक में किये गये रहस्योद्‌घाटन के चलते अपने परम–मित्र राष्ट्र इंग्लैंड से भी सम्बन्धों में खटास आ सकती है। कारण इस पुस्तक में बिट्रिश साम्राज्य को ही बंगाल के अकाल में मरने वाले साठ लाख निरीह और निर्धन लोगों की मौत के लिए उत्तरदायी ठहराया गया था।

उधर 'मिल–वाग' नामक जेल से ब्रूस की मुक्ति का दिन आ जाता है तो उधर अमेरिकी खुफिया विभाग उसके विरुद्ध एक रूसी एजेन्ट को गवाह बनाकर उसके विरुद्ध अमेरिका के विरुद्ध रूस के लिए गुप्तचरी का मिथ्यारोप लगाकर उसको देशद्रोह का अभियुक्त बनाना चाहता है। मौली को ब्रूस की वकील सिल्विया से यह ज्ञात होता है। इसीलिए वह रात्रि के निविड़ अंधकार में एक वनमार्ग से ब्रूस को जेल से बाहर निकालकर मैक्सिको भागने का कार्यक्रम तैयार करती है और वहीं पह अपने शेष जीवन के सुखमय एवं सुनहरी स्वप्न भी संजोती है। वह पूर्व योजना के अनुसार निकटवर्ती हवाई अड्डे की ओर कार में ब्रूस को ले जा रही होती है, तभी वहाँ की स्थानीय पुलिस उनको रुकने का संकते करती है लेकिन वह रुकती नहीं है। इसलिए पुलिस की गाडियों से टकराकर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार से अपने पावन–प्रेम की बलिवेदी पर वह अपना आत्मोगत्सर्ग करती है। उधर अमेरिकी सरकार ने उदारता का मुखौटा ओढकर ब्रूस पर देशद्रोह का मुकदमा चलाने का इरादा भी छोड दिया था क्योंकि ब्रूस बेकन की पुस्तक विश्वव्यापी बैस्ट सेलर जो बन चुकी थी। जिससे अमेरकिी सरकार को अपनी बदनामी का डर था।

अतएव यह पुस्तक एक ही साथ प्रेम, स्वप्न और संघर्ष की भी लोमहर्षक व रोचक कथा है। जब दुर्घटना में मौली की दुखद मृत्यु हो जाती है तो मौली का जीजा पादरी ओहारा उसके विषय में ब्रूस को यही कहता है – "एक गंभीर भूल" क्योंकि देखो तुम एक ऐसी औरत के लिए आँसू बहा रहे हो, जो सब कुछ ठेंगे पर रखती थी। सभी के लिए फिक्रमंद और जिसका दिल पूरी दुनिया से बड़ा था। मुझे सारी कहानी मालूम है––– तुमने उसे(बहुत) कम आंका है। तुम(यही) समझते रहे कि वह एक जोशीली अव्यावहारिक वामपंथी है और एक सनकी आयरिश दिमाग वाली छोकरी, जिसके अव्यावहारिक कदम हमेशा हवा में ही रहते हैं, पर यह उसे छोटा करने वाली बातें हैं– तुम मौली के विश्वासों पर बहस कर सकते हो जो कहना हो कह सकते हो, पर याद रखो जो कुछ(भी) तुम कहोगे, वह उसी के स्वप्न का हिस्सा होगा।' (पृ० 348)

अतः हावर्ड फास्ट ने यहाँ आकर इस प्रेम ओर संघर्ष की कथा को दुखान्तिकी में बदल दिया है, यदि अमेरिकी गुप्तचर विभाग के निर्णय–परिवर्तन की सूचना मौली को पहले मिल जाती तो भी यह प्रेम–कथा सुखान्त ही होती। यदि ऐसा हो भी गया था तो भी ब्रूस का सिल्विया के साथ प्रेम–प्रसंग या फिर ग्रंथी–बन्धन दर्शाकर भी इस कष्टकथा को सुखान्त बनाया जा सकता था। फिर भी वर्तमान भारतीय राजनीति में भी यह उपन्यास सन्दर्भ सापेक्ष है, क्योंकि यहाँ पर भी

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

उदारतावाद की वर्तमान में लगभग वही स्थिति है। अनुवादक कुमार मुकेश की भाषा जीवन्त है, अतएव पुस्तक रोचक और विचारोजेत्तक एवं कलात्मक भी है। यह एक ही साथ इतिहास और साहित्य की भी रचनात्मक कृति बन पड़ी है।

कृषि क्षेत्र में हो व्यापक सुधार

– प्रो० हवा सिंह

नए कृषि कानूनों को लेकर पंजाब, हरियाणा और अन्य राज्यों के हजारों की संख्या में किसान दिल्ली बॉर्डर पर कड़ाके की ठंड के बीच कानूनों को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। सरकार की मंशा है कि इन नए कानूनों से भारतीय कृषि क्षेत्र के उत्पादन, खरीद, मार्केटिंग, कीमत भंडारण और भूमि स्वामित्व में अमूलचूल परिवर्तन आएंगे और किसान के आर्थिक सुधार में ऐतिहासिक कदम साबित होंगे। इन कानूनों का असर किसानों की रोजी–रोटी पर ही नहीं कुछ सीमा तक संभावित असर बटाई पर खेती करने वाले तथा कृषि मजदूरों पर भी पड़ेगा। कृषि कानूनों का पक्ष तथा विरोध बहस का बड़ा मुद्दा बन गया है। कृषि उपज, व्यापार एवं वाणिज्य (संवर्धन एंव सरलीकरण) अधिनियम 2020 किसानों को अपनी उपज देश व विदेशों में किसी भी कोने में बेचने की आजादी देता है। मंडी में लगने वाली फीस, कर और आढ़तियों व बिचौलियों से छुटकारा मिलेगा। किसान अपनी फसल के उचित दाम लेने के लिए सरकारी व प्राइवेट मंडी में सीधे किसी को बेच सकता है। इससे उसे उचित दाम लेने का मौका मिलेगा। खेती के आधारभूत ढांचे में निजी निवेश आएगा और नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। किसान संघों का मत है कि कंपनी थोक विक्रेता, निर्यातक व साहूकार बिना लाइसेंस, फीस और कर के प्राइवेट मंडियों से सीधे अनाज खरीद सकेंगे। धीरे–धीरे मंडी व एमएसपी प्रणाली खत्म हो जाएंगी, क्योंकि कुछ वर्षों तक कंपनी एमएसपी से ज्यादा दाम देकर अनाज खरीदेगी और दूसरी तरफ सरकार खरीद बंद करना शुरू कर देगी। छोटे व मंझोले किसानों को अपनी उपज औने–पौने दाम पर बेचनी पड़ेगी। बिहार सरकार ने 2006 में एपीएमसी एक्ट खत्म कर दिया था। बिहार के किसान को मक्का व धान की फसल न्यूनतम समर्थन मूल्य से 30–40 प्रतिशत कम दाम पर बेचने के लिये मजबूर होना पड़ा। कृषक (सशक्ति एवं सरंक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि करार अधिनियम 2020 के तहत किसान फसल की बुआई से पूर्व या उत्पादन के बाद किसी व्यापारी, कंपनी व निर्यातक के साथ अनुबंध कर सकेगा। किसानों को उन्नत बीज, खाद, कृषि उपकरण और आधुनिक तकनीक उपलब्ध होगी।

नीति आयोग का मत है कि छोटी खेती गैरलाभकारी है। बिग फार्मिंग से किसानों को लाभ होगा। कंपनी और किसान का अनुबंध के संबंध में कोई विवाद होता है तो उसका निपटारा जिला सत्र के अधिकारी व कैंसिलेशन बोर्ड में 60 दिन के भीतर हो जाएगा। किसान संगठनों का मत है कि अनुबंध खेती का प्रभाव अपनी भूमि पर खेती करने वालों पर ही नहीं बल्कि बटाई व रेहन पर खेती करने वालों के साथ जुड़े मजदूरों पर भी पड़ेगा। 2011 की जनगणना के अनुसार 49.40 करोड़ भूमिहीन व्यक्ति थे तथा 1.2 करोड़ किसान बटाई की खेती करते थे। उन की रोजी रोटी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होगी। ग्रामीण क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो जाएंगे। आवश्यक वस्तु संशोधन अधिनियम 2020 के तहत उत्पादों को प्राप्ति, भंडारण व वितरण करने की स्वतंत्रता से बड़े किसान तथा व्यापारियों को लाभ होगा। इन कानूनों से ग्रामीण क्षेत्रों में वेयर हाउस, कोल्ड स्टोरेज, खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि उद्योग आने से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। छोटा किसान अपनी फसल को दूसरे स्थान पर बेचने व भंडारण करने में असमर्थ है। सीजन के समय कार्पोरेट और थोक व्यापारी सस्ते दामों पर आनाज खरीदेंगे व स्टोर कर लेंगे। भारतीय खाद्य निगम खरीद करना बंद कर देगी और जन विरतण प्रणाली खत्म होना शुरू हो जाएगी। 80 करोड़ जनसंख्या की रोजी–रोटी की गारंटी खत्तरे में पड़ जाएगी। सरकार व आंदोलित किसानों को यथार्थ समझना पड़ेगा। 1980 तक ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की दर में कमी आई। 1990 में व्यापार व औद्योगिक क्षेत्रों में निजीकरण, उदारीकरण व वैश्वीकरण शुरू हुआ, परंतु कृषि क्षेत्र उससे अछूता रहा। पंजाब में 1960–1962 में गेहूं व धान की फसल 27.3 व 2.5 लाख हेक्टेयर पर उगाई जाती थी जो 2018 –2019 में बढ़कर 43.1 व 39.6 लाख हेक्टेयर हो गई। पंजाब मे दालें 1960 –1961 में 19.4 लाख हेक्टेयर में बुवाई होती थी जो घटकर 2018–2019 में 0.4 लाख हेक्टेयर रह गई।

हरियाणा की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है। इसका मुख्य कारण गेहूं व धान पर एश्योर्ड न्यूनतम समर्थन मूल्य मिलता रहा, जबकि दूसरी फसलों पर किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिल पाया। न्यूनतम समर्थन मूल्य केवल 7 प्रतिशत किसानों को मिल रहा है। पंजाब व हरियाणा में 90 प्रतिशत गेहूं व धान की फसल न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जाती है। पंजाब व हरियाणा की मंडी व्यवस्था विश्व भर में सबसे अच्छी है। इसका मुख्य कारण भारत में सबसे पहले 1907 में लैंड क्लोनाइजेशन एक्ट के विरुद्ध सरदार अजीत सिंह

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है, वह अंधे के समान है। – अज्ञात

की अगुवाई में किसान आंदोलन हुआ और उनको देश निकाला की सजा दी गई। 1924 से 1945 तक यूनियनिस्ट पार्टी पंजाब में सत्ता में रही और चौधरी छोटूराम की अगुआई में कई कृषि कानून बनाए गए और उनके फलस्वरूप पंजाब के किसानों की आर्थिक दशा में बड़ा सुधार हुआ। आज पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिम उत्तर प्रदेश के किसानों को सोचना पड़ेगा कि वे किस तरह गेहूं व धान की खेती को कम करके अन्य फसलें जैसे दालें, सब्जियों, फलों की खेती करें और इसके साथ साथ खेती से जुड़े हुए अन्य धन्धे जैसे पोल्ट्री फार्म, मछली पालन व पशुपालन इत्यादि को बढ़ावा दें।

सरकार को चाहिए कि ऐसे धन्धों में किसान को वित्तीय सहायता प्रदान करे। आर्गेनिक फसलों को प्रोत्साहन दिया जाए जिससे कि गुणवत्ता के कारण ऊंचे दाम भी मिलेंगे तथा निर्यात भी बढ़ेगा और भंडारण की समस्या भी खत्म होगी। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री को बढ़ावा दिया जाए तथा खाद्य वस्तुओं का निर्यात बढ़ाया जाए और खाद्य वितरण प्रणाली में रेडिकल परिवर्तन किए जाएं। कुछ विशेष मुद्दों जैसे कंपनी व थोक व्यापारियों को न्यूनतम मूल्य पर फसल खरीदने और इसका उल्लंघन करने पर सजा का प्रावधान करना। विवाद सुलझाने की व्यवस्था को और मजबूत करना, जिससे छोटे किसानों के अधिकारों की सुरक्षा हो सके। एफसीआई तथा मंडी में भ्रष्टाचार को कम करने के लिए ठोस कदम उठाना। न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी देना इत्यादि। किसानों व कृषि क्षेत्र की समस्या का हल जल्दी से जल्दी निकाला जाना चाहिए। इस आंदोलन को कुचलने से देश को गंभीर परिणाम का सामना करना पड़ सकता है।

निर्ममता की हदें पार करते अपराधी

– डॉ मोनिका भारद्वाज

हालिया बरसों में दुष्कर्म– सामूहिक दुष्कर्म जैसे अपराधों के आंकड़े ही नहीं बढ़े हैं बल्कि ऐसी घटनाओं में हद दर्जे की बर्बरता भी देखने को मिल रही है। हाल ही में उत्तर प्रदेश के बदायूं में सामूहिक दुष्कर्म के बाद 50 वर्ष की आंगनबाड़ी सहायिका के साथ दिल दहला देने वाली बर्बरता कर हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। सामूहिक दुष्कर्म और हत्या के इस मामले ने निर्भया के साथ हुई दरिंदगी याद दिला दी है। मामले में दो आरोपियों की गिरफ्तारी हुई है जबकि मुख्य आरोपी की तलाश जारी है। दुर्भाग्यपूर्ण यह भी कि इस वारदात को मंदिर में अंजाम दिया गया। परिवारजनों के मुताबिक महिला शाम को पूजा के लिए गई मंदिर थी। काफी देर बाद भी जब वापस नहीं लौटी तो वे थाने गए, लेकिन तत्परता से कोई कार्रवाई नहीं हुई। देर रात आरोपितों ने घर के दरवाजे पर दस्तक दी और मृतका का क्षत–विक्षत शरीर छोड़कर भाग गए। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में पसली, पैर और फेफड़े को बुरी तरह क्षति पहुंचने की पुष्टि हुई है। दरिंदगी करने वालों ने महिला के निजी अंग में लोहे की छड़ जैसी चीज भी डाल दी है। साथ ही शरीर पर भी चोट के गंभीर निशान भी मिले हैं।

दुष्कर्म महिलाओं से होने वाले जघन्यतम अपराधों में शामिल है। अमानवीयता और क्रूरता की हद पार करने वाले ऐसे अपराधियों के लिए कठोर सजा का भय होना जरूरी है। विचारणीय है कि इन घटनाओं का केवल कानूनी पक्ष ही नहीं होता, ऐसे मामले पूरे समाज की संवेदनाओं और चिंताओं से जुड़े मामले हैं। देश की छवि को धूमिल करने और आधी आबादी के एक नागरिक के तौर पर सम्मान और गरिमा से जीने के हक को ठेस पहुंचाने वाली वारदातें हैं। यही वजह है कि ऐसे मामलों में दोषियों को त्वरित और सख्त सजा दी जानी जरूरी है समाज का बड़ा वर्ग समय–समय पर यह मांग करता रहा है कि ऐसे मामलों को अंजाम देने वालों को कठोर सजा देने का प्रावधान हो।

हालिया बरसों में दुष्कर्म– सामूहिक दुष्कर्म जैसे अपराधों के आंकड़े ही नहीं बढ़े हैं बल्कि ऐसी घटनाओं में हद दर्जे की बर्बरता भी देखने को मिल रही है। हाल ही में उत्तर प्रदेश के बदायूं में सामूहिक दुष्कर्म के बाद 50 वर्ष की आंगनबाड़ी सहायिका के साथ दिल दहला देने वाली बर्बरता कर हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। सामूहिक दुष्कर्म और हत्या के इस मामले ने निर्भया के साथ हुई दरिंदगी याद दिला दी है। मामले में दो आरोपियों की गिरतारी हुई है जबकि मुख्य आरोपी की तलाश जारी है। दुर्भाग्यपूर्ण यह भी कि इस वारदात को मंदिर में अंजाम दिया गया। परिवारजनों के मुताबिक महिला शाम को पूजा के लिए गई मंदिर थी। काफी देर बाद भी जब वापस नहीं लौटी तो वे थाने गए, लेकिन तत्परता से कोई कार्रवाई नहीं हुई। देर रात आरोपितों ने घर के दरवाजे पर दस्तक दी और मृतका का क्षत–विक्षत शरीर छोड़कर भाग गए। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में पसली, पैर और फेफड़े को बुरी तरह क्षति पहुंचने की पुष्टि हुई है। दरिंदगी करने वालों ने महिला के निजी अंग में लोहे की छड़ जैसी चीज भी डाल दी है। साथ ही शरीर पर भी चोट के गंभीर निशान भी मिले हैं।

दरअसल, ऐसी घटनाओं ने महिला सुरक्षा के जुड़े भरोसे के भाव को खत्म कर दिया है। नैतिक, सामाजिक और मानवीय मोर्चे पर इंसान की कुत्सित सोच और बर्बर व्यवहार को सामने ला दिया है। अब दुर्व्यवहार और दरिंदगी की कहीं

कोई सीमा नहीं दिखती। इस घटना में भी महिला के शरीर को हैवानों ने बुरी तरह नोचा और कई तरह से जख्मी किया। इतना ही नहीं, उसका निजी अंग पूरी तरह क्षतिग्रस्त मिला है। अफसोस कि ऐसी हैवानियत का यह अकेला मामला नहीं है। देश में छोटी बच्चियों से लेकर बुजुर्ग महिलाओं तक, ऐसी वीभत्स घटनाओं का शिकार बन रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में महिलाओं के प्रति अपराध 7.3 प्रतिशत बढ़ गए हैं।

इन आपराधिक घटनाओं में गौर करने वाली यह भी है कि महिलाओं से होने वाली जघन्यता लगातार बढ़ रही है। इतना ही नहीं सख्त कानून के बावजूद लंबित मामलों की बढ़ती संख्या भी अपराधियों के हौसले बढ़ा रही है। बीते साल गृह मंत्रालय ने राज्यसभा में एक प्रश्न के उत्तर में जानकारी दी थी कि विभिन्न अदालतों में महिलाओं के प्रति अपराध के 14 लाख से ज्यादा मामले लंबित हैं। आंकड़ों के मुताबिक उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा लंबित मामले हैं। महाराष्ट्र में 1,92,200 और उत्तर प्रदेश में 1,64,720 मामले लंबित हैं। एक रिसर्च पेपर के मुताबिक भारत में पिछले एक दशक में बलात्कार के जितने भी मामले दर्ज हुए हैं, उनमें से केवल 12 से 20 फीसद मामलों में सुनवाई पूरी हो पाई। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की हालिया रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रतिदिन बलात्कार की 87 वारदातें हो रही हैं, यह किसी से छुपा नहीं कि ऐसे अधिकतर मामले आज भी रिपोर्ट तक नहीं किए जाते कभी सामाजिक पारिवारिक दबाव तो कभी रसूख वाले अपराधियों के डर से बिना रिपोर्ट के ही कई मामले दबा दिए जाते हैं। बावजूद इसके दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि दुष्कर्म के जितने भी मामले दर्ज होते हैं, उनके मुकाबले सजा की दर बहुत कम है, जबकि ऐसी वारदातों में क्रूरता मन–मस्तिष्क को उद्वेलित कर देने की सीमा तक बढ़ी है।

असल में देखा जाए तो प्रशासनिक लापरवाही बरतने वाले पुलिसकर्मियों के लचर रवैये के अलावा फास्ट ट्रैक अदालतों की कमी, जांच रिपोर्ट में देरी, जांच एजेंसियों का ततीश के दौरान ढिलाई वाला बर्ताव लंबित मामलों की बढ़ती फेहरिस्त के लिए जिम्मेदार है। बदायूं के हुए इस मामले में भी पुलिस महिला के परिजनों को करीब 44 घंटे तक थाने के चक्कर कटवाती रही। हैवानियत के 17 घंटे बाद भी महिला की लाश घर के बाहर पड़ी रही। हालांकि इस लापरवाही के लिए स्थानीय पुलिसकर्मियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा रही है पर ऐसी घटनाओं में परिवार को जरूरत के समय प्रशासन का सहयोग न मिले तो आगे की कार्रवाई मात्र खानपूर्ति लगती है। दुखद है कि दुष्कर्म की ऐसी भयावह घटनाओं के लिए हमारा देश दुनियाभर में शर्मसार हो चुका है। यह विडंबना ही है कि एक ओर बेटियां पढ़–लिखकर आगे बढ़ रही हैं तो दूसरी ओर उनकी सुरक्षा से जुड़े हालात डरावने बन रहे हैं। निर्भया केस के बाद तो भारत को रेप कैपिटल तक कहा गया। वैश्विक छवि धूमिल होने के अलावा ऐसी घटनाएं हमारे सामाजिक–पारिवारिक ढांचे के लिए भी चिंतनीय हैं। ऐसी असुरक्षित परिस्थितियों में बेटियों की पढ़ाई छूट जाती है। बाल विवाह जैसी कुरीति को बढ़ावा मिलता है। कामकाजी महिलाएं नौकरी छोड़ने को विवश हो जाती हैं। हमारे यहां महिलाएं अपने आंगन में सुरक्षित नहीं हैं। एनसीआरबी के ताजा आंकड़ों के मुताबिक करीब 31 प्रतिशत मामलों में महिला के किसी न किसी जानने वाले को ही जिम्मेदार पाया गया है।

अफसोसनाक यह भी है कि ऐसे दर्दनाक हादसों के साथ राजनीतिक बयानबाजी और खांचों में बंटा विरोध भी जुड़ गया है। अपराधियों का समुदाय, घटनास्थल और दरिंदगी करने वालों की उम्र को लेकर अजब–गजब ढंग से जताया गया विरोध या समर्थन तो दिखता ही है, दरिंदगी की शिकार हुई महिला को लेकर भी बेवजह के सवाल उठाए जाते हैं, जबकि ऐसी सभी बातें कुत्सित मानसिकता वाले लोगों का दुस्साहस बढ़ाती हैं। समाज का नकारात्मक रवैया और कानूनी उलझनें, पीड़िता और उसके परिजनों के लिए ही परेशानी का सबब बनते हैं। अपराधी या तो बच निकलते हैं या मामूली सजा पाकर फिर समाज में खुले घूमते हैं। ऐसे भी कई मामले सामने आ चुके हैं जब एक बार दुष्कर्म जैसा घिनौना अपराध करने के बाद नाम मात्र की सजा पाकर अपराधी ने फिर ऐसा अपराध करने का दुस्साहस किया है। दुष्कर्म महिलाओं से होने वाले जघन्यतम अपराधों में शामिल है। अमानवीयता और क्रूरता की हद पार करने वाले ऐसे अपराधियों के लिए कठोर सजा का भय होना जरूरी है। विचारणीय है कि इन घटनाओं का केवल कानूनी पक्ष ही नहीं होता, ऐसे मामले पूरे समाज की संवेदनाओं और चिंताओं से जुड़े मामले हैं। देश की छवि को धूमिल करने और आधी आबादी के एक नागरिक के तौर पर सम्मान और गरिमा से जीने के हक को ठेस पहुंचाने वाली वारदातें हैं। यही वजह है कि ऐसे मामलों में दोषियों को त्वरित और सख्त सजा दी जानी जरूरी हैद्य समाज का बड़ा वर्ग समय–समय पर यह मांग करता रहा है कि ऐसे मामलों को अंजाम देने वालों को कठोर सजा देने का प्रावधान हो। महिलाओं के सम्मान का नैतिक दायित्व कुत्सित प्रवृत्ति के जिन लोगों को लोगों को स्वयं समझ नहीं आता उन्हें कानून कठोरता से यह पाठ पढ़ाए। जरूरी है कि समाज, परिवार और सरकार सभी चेतें। न सिर्फ ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार किया जाए बल्कि त्वरित कानूनी कार्रवाई कर दोषियों को सख्त सजा भी दी जाए।

जो अपना चित्र मुझमें लगा देते हैं, वे मेरी कृपा से संसार के सभी दुःखों से पार हो जाते हैं। –श्री कृष्ण

व्यंग्य, हद हो गयी चापलूसी की

– कमलेश भारतीय

कहा जाता है कि मक्खन लगाना। कहा जाता है कि चमचागिरी करना। चमचे बनना। कहते हैं बहुत कुछ। टी सी मारना। कितना कुछ कहा जाता है। कभी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के लिए असम से कांग्रेस अध्यक्ष बरूआ ने कहा था कि इंडिया इज इंदिरा एंड इंदिरा इज इंडिया। तब भी लोग हंसें बिना न रहे थे। यह देश तो बहुत बड़ा है और कोई एक व्यक्ति देश की जगह नहीं ले सकता ।

इस बार त्रिपुरा के मुख्यमंत्री विप्लव देव ने ऐसी ही हास्यास्पद बात की है। वे अपने मुख से कह रहे हैं कि भाजपा नेतृत्व की नेपाल व श्रीलंका में भी विस्तार की योजना है। विप्लव का कहना है कि अमित शाह जी ने यह लक्ष्य तय किया है। हमें नेपाल व श्रीलंका में पार्टी का विस्तार करना है। है न कमाल। कमल का फूल सिर्फ पश्चिमी बंगाल में ही खिलाने की योजना नही है अमित शाह जी की। यह तो बहुत छोटी बात और छोटा लक्ष्य होगा। वे तो देश की सीमाओं से बाहर जाकर नेपाल और श्रीलंका में भी गुल खिलाने वाले हैं।

मजेदार बात कि इस पर भाजपा प्रवक्ता आगे बढ़कर बोले कि हमारी पार्टी की विचारधारा नेपाल, श्रीलंका ही नहीं, एशिया अफ्रीका के अन्य देशों में भी पहुंच रही है। लो कर ल्यो बात।

कहते हैं कि जहां नहीं पहुचे रवि, वहां पहुंचे कवि लेकिन ये त्रिपुरा वाले मुख्यमंत्री और भाजपा प्रवक्ता तो भाजपा को चांद तारों तक ले जाने के सपने दिखाने लगे हैं। अब क्या क्या इरादे हैं यह जाहिर कर दिये हैं। सचमुच ऐसे नेतृत्व पर गर्व होना चाहिए। फिर विप्लव तो विप्लव ही हैं। बरूआ की बात तो बहुत छोटी रह गयी। इंदिरा इज इंडिया न हुआ। पर भाजपा के कमल तो देश विदेश खिलने लगेंगे। कितनी बड़ी उपलब्धि। यों ही नहीं कहते कि कुछ नया सोचो, कुछ बड़ा सोचो। सोच लिया न। अब तो खुश हो? क्या हुआ पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस के दाम बढ़ते जा रहे हों। क्या हुआ जो किसान आंदोलन में किसान दम तोड़ रहे हों। क्या हुआ बलात्कार, अपहरण और घोटालों की घटनाएं बढ़ती जा रही हों। पार्टी के नेताओं के इरादे तो ऊंचे हैं। आसमान छूने के हैं। विप्लव जी। जरा चीन या पाकिस्तान की ओर भी कदम बढाइए। लम्बे डग वाले वामन बन जाइए। फिर देखिए क्या क्या अपना हो जाता है। हद तो यह है कि ऐसे ऐसे लोग किसी राज्य का नेतृत्व कर रहे हैं। इधर हमारी प्रिय एक्ट्रेस कंगना रानौत का कहना है कि मेरे किसी ट्वीट से हिंसा नहीं भड़की। जी नहीं। सारी अखबारें और मीडिया के अनुसार आप जब जब ट्वीट करती हैं फूल झड़ते हैं।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 31.10.95) 25/5'3" BDS from P.U. Chandigarh.Pursuing MPH from Kerala.Father school teacher and mother headmistress. Required Army officer, Doctor or Civil Service Officer. Avoid Gotras: Nain, Dimara, Mehla. Cont.: 9416773199, 7404764580
- SM4 Jat Girl (DOB19.10.86) 34/5'5" MSc (Geography), M.Phil, PhD, NET & JRF qualified. Father retired from gazetted post in Haryana Govt. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan.Cont.: 9646404899
- SM4 Jat Girl (DOB 88) MA (Economics), PhD (Economics), NET & IELTS cleared. Employed in Chandigarh as Assistant Professor on contract basis. Father class-II officer from Haryana Govt. Brother settled in USA. Avoid Gotras:Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040
- SM4 Jat Girl (DOB 15.03.89) 31/5'5" Employed in Indian Overseas Bank as P.O. Avoid Gotras:Gawariya, Sangwan, Sunda. Cont.: 9646519210
- SM4 Jat Girl (DOB 09.11.94) 26/5'4" M.Sc Math, BEd from P. U. Avoid Gotras:Kaliraman, Pawar, Jani. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 11.08.88) 32/5'6" MBA, LLM. Avoid Gotras:Hooda, Phaugat, Jatan. Cont.: 9896871134
- SM4 Jat Girl (DOB 24.11.92) 28/5'2" M.Com from P.U. Working in Electricity Board Haryana on contract basis. Avoid Gotras: Pawar, Dahiya, Pilania. Cont.: 9417723184, 9780325534
- SM4 Jat Girl 29/5'4" BA from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881.
- SM4 Jat Girl (DOB Nov. 94) 26/5'1" B. Com., M.Com. NET in Commerce, B.Ed., doing Ph.D from MDU, Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Gehlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Girl (DOB 06.06.93) 27/5'2" B.Sc. Medial, MA (English).One year diploma in German language and library. Doing D. Pharmacy. Avoid Gotras: Jattan, Dabas, Rana. Cont.: 9728308809
- SM4 Jat Girl (DOB 23.08.92) 28/5'2" B.Tech.in Electrical & Communications. GATE cleared. Avoid Gotras:Rathi, Balhara, Redhu. Cont.: 9888146931
- SM4 Jat Girl (DOB 19.08.95) 25/5'11" M.A. economics from P.U. Chandigarh.B.Ed.Working as teacher in a reputed school at Panchkula.Father Army Exservice-man. Mother housewife.Avoid Gotras:Dalal, Kadiyan, Gawadiya. Cont.: 8054064580
- SM4 Jat Girl (DOB 06.02.92) 28/5'2.5" M.A. Economics, B.Ed. Working as dance teacher in school at Mohali. Father in Govt. service. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 7837908269
- SM4 Jat Girl (DOB 26.02.91) 29/5'5" B.D.S. Working as P.V. Scientist in Parexel International MNC at Chandigarh. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Own house at Chandigarh &

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

family settled at Chandigarh. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras:Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 9779721521

- SM4 Jat Girl (DOB 04.04.92) 28/5'3" M. Tech. in Electrical &Communication from DCRUST Murthal.MBA in HR & Marketing.Working in MNC I.T. Park, Chandigarh.Avoid Gotras:Sura, Malik, Mann, Sehrawat, Siwach. Cont.: 9467864845
- SM4 Jat Girl (DOB 17.12.95) 25/5'4" B.Sc. Nursing. working as Lecturer at Swami Devi Dayal College of Nursing. Preferred match BAMS, BDS. MBBS. Avoid Gotras:Pilania, Malik, Singroha. Cont.: 7015420969
- SM4 Jat Boy 33/6'2"Advocate, Practicing in Delhi. Father retired as Additional Secretary from Govt. of India. Mother retired school lecturer from Haryana Govt. Elder brother working in India Overseas Bank. Preferred girl in service.Avoid Gotras: Ahlawat, Malik,Sangwan. Cont.: 9023187793
- SM4 Jat Boy (DOB 20.04.91) 29/5'8"B.Tech.Computer Science.Working in Sparrow GG Solutions OPC ltd. With Rs. 6 lakh package PA. Avoid Gotras: Kadyan, Ahlawat, Dagar.Cont.: 9876855880
- SM4 Jat Boy (DOB 04.09.87) 33/5'10"B.Tech.ECE.Working as Junior Data Scientist in US based Research Lab at Noida. Father retired Headmaster from Delhi Govt. Avoid Gotras: Antil, Gehlot, Shokeen.Cont.: 9312063389
- SM4 Jat Boy (DOB 20.03.88) 32/5'11"Graduation in Photography.Only son.Own house in Urban Estate Panchkula. Father retired from gazetted post in Haryana Govt. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan.Cont.: 9646404899
- SM4 Jat Boy (DOB March 92) 28/5'9" B.S.c (Computer Science) from Punjab University. Pursuing MCA. Employed in Kurukshetra University Kurukshetra as Clerk on regular basis. Father in private job. Mother housewife. Sister married and employed in Punjab Government. Family settled in Mohali. Preferred match in Government job. Avoid Gotras: Jadge, Budhrain. Cont.: 9056787532.
- SM4 Jat Boy26/6'1"Polytechnic Electric Diploma.Working in MNC with package of Rs. 4 lakh PA. Mother retired teacher. Brother, sister well settled. Preferred tall girl in service.Avoid Gotras: Mor, Malik, Budhwar Cont.: 8295865543
- SM4 Jat Boy(DOB 26.05.94) 26/6'4"B.Tech.Mechanical Degree Auto Cat.Settled in Canada (Toronto). Father in Haryana Govt. Mother school teacher in Haryana Govt. Avoid Gotras: Sayan, Punia Cont.: 9416877531
- SM4 Divorcee Jat Boy (DOB11.05.81) 39/5'11"MBA (IT). Working in HCL Noida as Network Consultant. Preferred Tri-city/NCR match. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya. Cont.: 9466629799, 9255525099
- SM4 Jat Boy 28/5'10" MBA (HR). Working in Maruti as Assistant Manager at Gurgaon. Father and mother both retired as Class-I Officers from Haryana Govt. Sisters married and are class-I officers. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Jatrana, Tewetia, Dagar. Cont.: 9988442438 (Wtsp)
- SM4 Jat Boy(DOB 10.03.90) 30/5'11"B.Sc (HM).Avoid Gotras: Sangwan, Punia, Sheoran. Cont.: 9888476688
- SM4 Jat Boy(DOB 01.01.88) 33/5'9" B. Tech. (Mechanical). Working in Central Govt. Chandigarh as Assistant Audit Officer in CAG Haryana cadre and also selected as S.I. in Delhi Police. Father retired govt. employee. Avoid Gotras: Sheoran, Sangwan, Punia. Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Boy(DOB Jan. 89) 31/5'8" B. Tech. (Electronics). MBA. Self business. Avoid Gotras: Mor, Panchal, Rathi. Cont.: 9468457144
- SM4 Jat Boy(DOB15.11.95) 25/6'1" Employed as Nursing officer in ESI Hospital, Govt. of India in U.P. with salary of Rs. 75000/- PM. Preferred employed match. Avoid Gotras: Bhanwala, Mann, Khatkar. Cont.: 9417579207
- SM4 Jat Boy 26/5'8" B.A., M.A. first year. Own business.Avoid Gotras:Malik, Dalal, Ghanghas. Cont.: 9041314951.
- SM4 Jat Boy (DOB 18.08.91) 28/6 feet MBA in H.R & Marketing. Avoid Gotras: Rana, Joon, Aatil. Cont.: 8264865639, 7087501598
- SM4 Jat Boy 30/5'8" B.Tech.Working in I.T. Company for last four year.Avoid Gotras:Malik, Khatri, Dahiya. Cont.: 9463491567
- SM4 Jat Boy 29/5'9" B.A. Own business of readymade garments. . Avoid Gotras:Sidhu, Ghuman. Cont.: 8054445234
- SM4 Jat Boy (DOB 06.08.91) 29/5'6" B. Tech. in ECE. Working in MNC in Chandigarh with 12.5 lakh package PA. Father retired from PSU. Own house and commercial plot in PanchkulaDistt..Preferred working urban living family girl.Avoid Gotras:Dahiya, Ruhella, Ruhil. Cont.: 9467806085, 7206328529
- SM4 Jat Boy (DOB 12.11.94) 26/5'11" Employed as J.E. in Municipal Corporation Chandigarh. Preferred match from Tri-city with Govt. job. Avoid Gotras: Malik, Redhu, Grewal. Cont.: 8168312760
- SM4 Jat Boy 29/6 feet. M.com, NET, GRF cleared three times. Employed in Kurukshetra University on contract basis. Mother professor in Govt. College. Father retired from Haryana Govt. Own house at Panchkula and Gurgaon. Avoid Gotras:Sangwan, Malik, Dhanda. Cont.: 7015108785
- SM4 Jat Boy (DOB 13. 04.93) 27/5'11".B.Tech in Computer Science from SRM College Chennai. Father Army Ex-service man. Mother housewife.Avoid Gotras:Dalal, Kadian, Gawadiya.Cont.: 8054064580
- SM4 Jat Boy (DOB 17.03.93) 27/5'10".B.A. Own house at Bhiwani.Ten acre agriculture land at village.Father in Govt. service.Avoid Gotras:Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 7837908269
- SM4 Jat Boy (DOB February 93) 27/6'1". B. Tech Mechanical Engineering. Job in SSWL. Father retired from Govt. service. Avoid Gotras:Nehra, Kadyan, Dhull, Malik, Hailwat, Saroya, Dalal. Cont.: 9877996707
- SM4 Jat Boy (DOB 05.08.93) 27/5'8" Degree in B.V.S.C. Employed as Veterinary Surgeon in Haryana government on contract basis.AvoidGotras:Gahlayan, Malik, Boora. Cont.: 9468411784, 9350963667
- SM4 Jat Boy (DOB 26.09.91)29/5'8" B.A. LLB, Doing practice as Advocate in Punjab & Haryana High Court. Pursuing judiciary.Only son. Three house at Chandigarh, Panchkula, Hisar,.Three acre land in village.Three shops and plots.Avoid Gotras: Punia, Nain, Sihag. Cont.: 9316131495
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lacs PA.Father businessman.Mother housewife.Avoid Gotras: Jatyan, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242
- SM4 Jat Boy (DOB 08.10.91)29/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Employed in a reputed Company as Senior Engineer. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Malik, Balyan. Cont.: 9466015020
- SM4 Jat Boy (DOB 20.04.91) 29/5'8" BTech in Computer Science. Business. Avoid Gotras: Kadyan, Ahlawat, Dagar. Cont.: 9876855880

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। –मनु

प्रेस विज्ञप्ति गणतंत्र दिवस के अवसर पर विधानसभा परिसर में लगा राजा नाहर सिंह का फोटो, मुख्यमंत्री ने किया अनावरण

– हरपाल सिंह राणा

लम्बे प्रयासों के बाद विधानसभा परिसर में लगा राजा नाहर सिंह का चित्र, मुख्यमंत्री ने किया अनावरण गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली विधानसभा में 1857 के स्वतंत्रता सेनानी शहीद राजा नाहर सिंह जी के चित्र का मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल द्वारा अनावरण किया गया। विधानसभा परिसर में लगने वाला यह स्वतंत्रता सेनानियों की लगने वाली 73वीं फोटो है।

दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष राम निवास गोयल ने अपने विधानसभा अध्यक्ष के कार्यकाल में विधानसभा परिसर में स्वतंत्रता सेनानियों की फोटो गैलरी लगवाई है। इसमें अब तक 72 स्वतंत्रता सेनानियों की फोटो लग चुकी है। सोमवार को इसमें राजा नाहर सिंह की फोटो भी शामिल हो गई। सामाजिक कार्यकर्ता और नाहर सिंह अभियान के संयोजक हरपाल सिंह राणा बताते है कि चार साल की मशक्कत के बाद तस्वीर लगी है, जिसके लिए लगभग चार वर्षो से पत्राचार किये जा रहे थे। 1857 के विद्रोह में राजा नाहर सिंह ने दिल्ली को अंग्रेजों से 134 दिनों तक आजाद कराया था, लेकिन बाद में अंग्रेजों ने धोखे से फांसी दे दी थी। विधानसभा में उनकी फोटो लगाने के लिए सभी साथी बधाई के पात्र है। दो साल पहले यह मामला विधानसभा अध्यक्ष के पास गया था। जिसके बाद उन्होने फोटो बनवाई थी। हरपाल राणा का कहना है कि विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि इस साल से राजा नाहर सिंह की जयंती भी मनाई जाएगी और दिल्ली सरकार के बनने वाले नए विश्वविद्यालय का नाम भी नाहर सिंह के नाम पर रखने का प्रस्ताव रखेंगे। कार्यक्रम में पूर्व विधानसभा अध्यक्ष चौधरी योगानंद शास्त्री, 360 गांव के प्रधान चौधरी रामकरण, डॉ अमृता, शम्मी अहलावत, सीमा राणा, कर्नल रामहेर मलिक, चौधरी छोटू राम, नरेश चहल, भीम सिंह छिकारा, रामकुमार टोकस, ईश्वर सिंह तेवतिया, आनंद खत्री, अनिल डागर, मास्टर चंद राम, राजेन्द्र सिंह मान, भरत सिंह पवार, हरिराम माथुर, डॉ देवेंद्र चौधरी, विक्रम सिंह धनखड़ अनेकों व कई संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

अच्छाई लौट कर आती है

ब्रिटेन के स्कॉटलैंड में फ्लेमिंग नाम का एक गरीब किसान था। एक दिन वह अपने खेत में काम कर रहा था। अचानक पास में किसी के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी। किसान ने अपना साजो सामान व औजार फेंका और तेजी से आवाज की तरफ लपका। आवाज की दिशा में जाने पर उसने देखा कि एक बच्चा दलदल में डूब रहा था। वह बालक कमर तक कीचड़ में फंसा हुआ बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहा था। वह डर के मारे बुरी तरह से कांप रहा था और चिल्ला रहा था। किसान ने आनन–फानन में लंबी टहनी ढूंढ़ी और अपनी जान पर खेलकर उस टहनी के सहारे बच्चे को बाहर निकाला। अगले दिन उस किसान की छोटी सी झोंपड़ी के सामने एक शानदार गाड़ी आकर खड़ी हुई। उसमें से कीमती वस्त्र पहने हुए एक सज्जन उतरे, उन्होंने किसान को अपना परिचय देते हुए कहा कि वह इस अहसान का बदला चुकाने आए हैं। फ्लेमिंग ने उस सज्जन के ऑफर को ठुकरा दिया। बालक के पिता ने कहा कि मेरा नाम रोडाल्फ चर्चिल है। फ्लेमिंग ने कहा– मैंने जो कुछ किया उसके बदले में कोई पैसा नहीं लूंगा। किसी को बचाना मेरा फर्ज है, मानवता है, इंसानियत है। इसी बीच फ्लेमिंग का बेटा झोंपडी के दरवाजे पर आया। उस अमीर सज्जन की नजर अचानक उस पर गई तो एक विचार सूझा। उसने पूछा– क्या यह आपका बेटा है? किसान ने गर्व से कहा– हां! उस व्यक्ति ने किसान से कहा– ठीक है, अगर आप को मेरी कीमत मंजूर नहीं है तो ऐसा करते हैं कि आपके बेटे की शिक्षा का भार मैं अपने ऊपर लेता हूं। मैं उसे उसी स्तर की शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करूंगा जो अपने बेटे को दिलवा रहा हूं। फिर आपका बेटा आगे चलकर एक ऐसा इंसान बनेगा, जिस पर हम दोनों गर्व महसूस करेंगे।

किसान ने सोचा– मैं तो उच्च शिक्षा नहीं दिला पाऊंगा और ना ही सारी सुविधाएं जुटा पाऊंगा, जिससे कि यह बड़ा आदमी बन सके। बच्चे के भविष्य की खातिर फ्लेमिंग तैयार हो गया। अब फ्लेमिंग के बेटे को सर्वश्रेष्ठ स्कूल में पढ़ने का मौका मिला। आगे बढ़ते हुए उसने लंदन के प्रतिष्ठित सेंट मेरीज मेडिकल स्कूल और कॉलेज से स्नातक डिग्री हासिल की। आगे चलकर किसान का यही बेटा पूरी दुनिया में पेनिसिलिन का आविष्कारक महान वैज्ञानिक सर अलेक्जेंडर फ्लेमिंग के नाम से विख्यात हुआ। यह कहानी यहीं खत्म नहीं होती, कुछ वर्षों बाद उस अमीर के बेटे को निमोनिया हो गया और उसकी जान पेनिसिलिन के टीके से ही बची। उस अमीर रोडाल्फ चर्चिल के बेटे का नाम था– विंस्टन चर्चिल, जो दो बार ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे। इसलिए व्यक्ति को हमेशा अच्छे काम करते रहना चाहिए, क्योंकि आपका किया हुआ काम आखिरकार लौटकर आपके पास ही आता है यानि अच्छाई पलट–पलटकर आती रहती है। अतः यकीन मानिए कि मानवता की दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम आपकी स्वयं की चिंताओं को कम करने में मील का पत्थर साबित होगा। हम जैसा करेंगे, वैसे ही परिणाम सामने आते हैं...।

मनुष्य की जिंदगी एक सुंदर पक्षी की भांति है, जो किसी डाल पर बैठा हुआ थोड़ी देर चहचहाता है और फिर उड़ जाता है। –इकबाल

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और वर्ष 2021 में निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- (पांच लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह) रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।